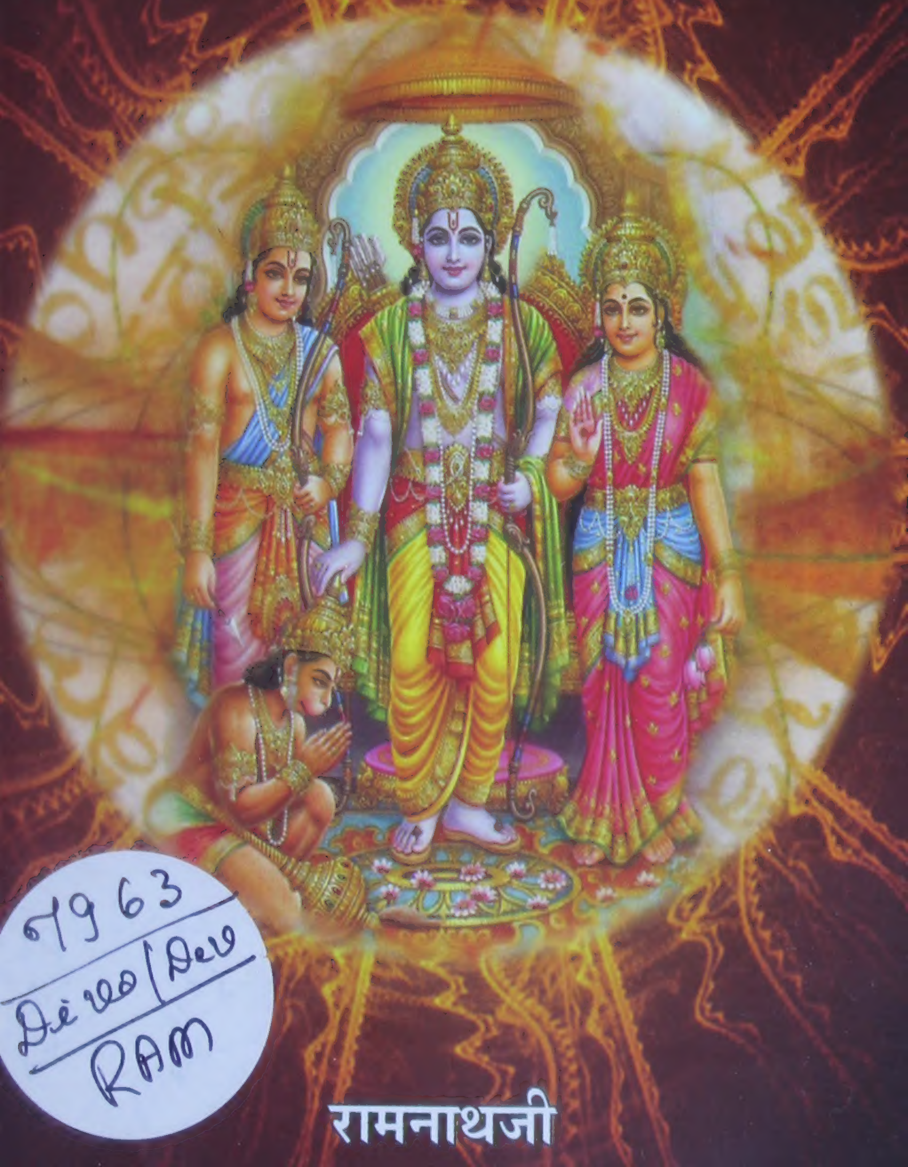
# श्रीमद
# कोंकणि रामायण





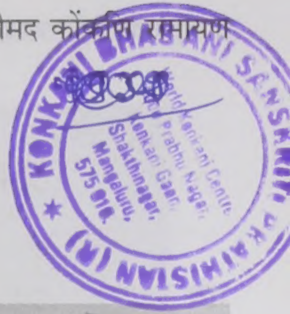
रामनाथजी



शुभ अशिर्वादु

# कृष्णानन्द पै अणि बंवन्ड

*Krishnananda Pai & Brothers*




# जय श्रीराम

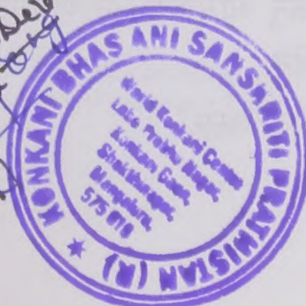
## मुखपाठ



श्रवणं कीर्तनं रामस्य
स्मरणं पादसेवनं
अर्चनं वन्दनं दास्यं
सख्यं आत्मनिवेदनं

अस्सित रामनाम महत्व अणि विष्णुमाहात्म्या पाशून संगताय। देवाक दोस्तु जावनूय तक कीर्तन कोरनूय तज्ज पादसेवा कोरनूय तचिलगि मगूनूय; पुण्य, चंकपण, संपत्ति विद्या सग काण गेवयात।

रामनामाचे माहात्म्यत चंडालाक महाकवि, आदिकवि वाल्मीकि जावनून देवान ओड्डुकेल्लोलो। सत्यवन्तूय, धर्मिष्ठूय, कर्मयोगीय जावयात। तशीच रामायण पारायण कोरनूय चांक जावयात।




रामनाथजी

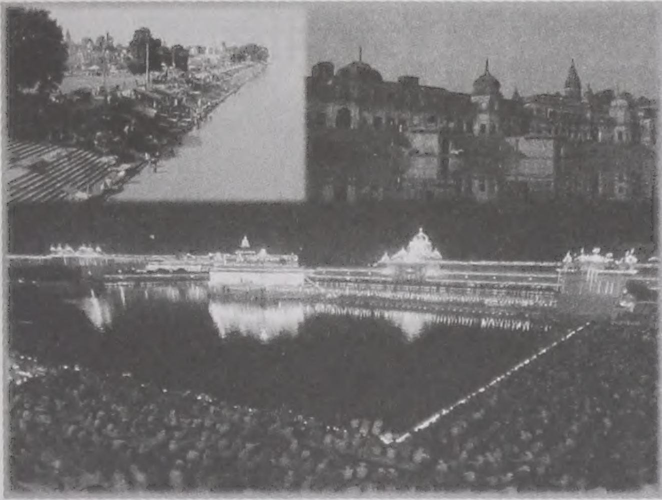
# अयोध्या अणि दशरथ



मनु मोणु नाव अशिल्ले रय्यान करेयलेलि नगरित अयोध्या। कोसला राज्या राजधानि। सस्य समृद्धि सम्पत्ति असिन्ने कोसला राज्य।

कुबेराषसि सम्पत्ति असिल्लोत दशरथरायु। दशरथरायक तीन बाइलो। ओल्लि कौसल्या। दुसेरि कैकेयि। तिसेरि सुमित्रा।

जल्लारीयि रय्याक सन्तान जल्लेना। ते दुःख रय्यामन्नातु। तसी रणियांकयी।
रय्यान पुरोहित जाऊनु असिल्लो वसिष्ठ बोटुममा लगि निंगीने।
वसिष्ठ महर्षिन संगीने
"दशरथरया एकि वाट अस्स"
"संगाय बोटमाम"।



"पुत्रकामेष्ठि मोणु अस्सिल्लो एकु यागु अस्स"
"तो वृतशुद्धीन मन्नान भक्तीन कोरका"
रायुय राणियोय यागा बेगेक बायरसरलि।

# पुत्रकामेष्ठि



यथाविधि दशरथरयान पुत्रकामेष्ठि यागु वसिष्ठमहर्षि केरान करेयलो। ऋष्यश्रृंगमहर्षि तेवेलेरि पवलो। यागमध्ये सुकुन प्रजापति पायसु गेवुनु ऊँचारि एयलो अणि संगीने। हे महाराय देवगणा तुजेरि ओडि प्रीति। यो पायसु काणगे अणि बाइलांक दी।

दशरथरायु उठायलो अणि पायसु काणगेतोलो। देवगणानि पुष्पवृष्टि केल्लि। दसरथरायन पायसु कौसल्येकयि कैकेयिकेयि दिल्लो। कौसल्येन एकु भागु सुमित्रे दिल्लो। कैकेयिनेयि तिगेलांतुलो एकु भागु सुमित्रे दिल्लो।

यथाविधि दशरथरायक संतान जल्लि। चोगुजाण चेल्ले। दशरथरायन कौसल्ये पुत्ताक श्रीराम अणि कैकेयि पुत्ताक भरत मोणुय सुमित्राले चेल्लांक लक्ष्मोणु अणि शत्रुग्न मोणुय नामकरण केल्ले।



तशि इक्षांकु वंशु अणि दशरथराय कुडुंब संपुष्ठ जल्ले।

यथाविधि उपनयन कोरनु रामाक अणि बंण्डांक वसिष्ठ महर्षि लगी वेदाध्यानाक सोल्ली।

चोगयि अस्त्र-शस्त्र अणि वेद अध्ययन यथाविधि सिकुन समर्थ जल्ले। दशरथरायन वसिष्ठ महर्षि लगी निंगीने।

"महर्षि रामु अणि बंवण्ड ओड जल्ले। तंका भरणपरिचय दींका। आव रामाक युवराय कोरु वत्ता। इत्ति संगताय?"

"जायत महाराया। ती त चाँगि वाट।"

ये समयारि बायर सुगुन एड्ड शिपायि दावुनु एयलो अणि संगीने "हे महाराया विश्वामित्रु महर्षि एयला।"

"अपेयायि आवेयि एत्ता।"

एसि संगुन दसरथराय उठान परिवारसमेत विश्वमित्रमहर्षिक स्वागत कोरु बायर सरले।

# विश्वामित्रु

दशरथरयान विश्वामित्र ऋषीक यथायोग्य आदर दीवनु, भितेरि उदून सिंहासनिरि बेस्सेयलो।

"संगाय महर्षे! अम्मि इत्ते कोरचे?

"महाराया! तुगेले बहु गुणवन्त जल्लेले पुत्रांक पोलोंचाक एयलोलो।"



"ओडु सोन्तोषु महर्षि।"

तंका आर्शिवादु दीवनु रकायी देवान्तो"

दशरथरयान चेरडु वांक अप्पेयलो।

"हे रामा! भरता! सग मुकारि एयाई। तुंका पोलोचाक विश्वामित्रु महर्षि एयला"

अप्पा उधीता अयकुन रामुय बौंडयि दावनु सभागृहांतु एयनि।

चेरडुवाँक दिकुन विश्वामित्राक ओडु सन्तोषु जल्लो।

"महर्षे यो ओल्लो। मेगेलो रामु। यो दुसेरो भरोतु। ये दोगय जवल लक्ष्मोणु अणि शत्रुग्नु।

जायत महाराया। अंका ओडि प्रीति दिस्सता।

"शतायुभव !"



विश्वामित्रान बौंडाक आक्षत गल्ले अणि अर्शिवादु दिल्लो।

रामूय, भरतुय लक्ष्मोणुय शत्रुग्नुय मुकारि एयनि विश्वामित्र महर्षिले पाय अपोणु पाँयपल्ले।

विश्वामित्रान रामाक लगी दोरनु रबेयलो अणि संगीले।

"हे दशरथरया! अंका तुगेले रामाक यागरक्षेक जावनु एदे काल सोणु दींका।"

"रामाक अस्त्र-शस्त्राँतु जाँका जल्लेलि निपुणता सिखोवनु सोडीन। इत्ते संगता?"

"महर्षे! जायना। जायनेय। अम्मि तुंचेकेले पाय दरताय। रामा सोडूक जायनेय। मेगोलो मोगातो।"

"जायनेय देवान्दो। चेरडुवाँक सोडु जायनेय।"

अम्मि एत्तायि तुंचे लगी।

"यागरक्षय कोरनु देवगणाँक संरक्षण दीवनु मक्का अनुभव अस्स।"

"न जायनेय दशरथरया तुंगेलो रामु धर्मरक्षेक जावनु जन्मु गोत्तलो महा विष्णु! देवु। तका अम्मि वरताय"

उतलेसंगून विश्वामित्र उठायलो।

विश्वामित्राने वरतमान अयुकूक वसिष्ट भटममाँक कयरा गौरव मन्नाजल्ले।

वसिष्ट महर्षिन संगीने

"हे दशरथरया ! तु चंग मन्नान ! सोन्तोषान रामाक विश्वामित्रा लगी बलेयि।"

अंगलेलो रामु यागरक्षेय धर्मरक्षेय कोरनु ऐस्वरथवन्तु जावनु एतोलो।

वसिष्ट महर्षिने वरतमान अयकून दशरथयान रामाक यागरक्षे जावनु सोडु आरंबु गल्लो।

"रामु मुकारि ऐयलो अणि संगीने। अप्पा ! आव यागरक्षेक जावनु विश्वामित्र ऋषि लगी रन्नातु वचाक बायर सरता।"

ये अयकूक लक्ष्मोणुय मुकारि एयलो अणि संगीने

अप्पा ! आवेय वत्ता अण्णा लगी।

"जायत लक्ष्मणा ! तु अण्णा लगी वच। वचायि ! वोचून चंकपण कोरनु एयायि।"

देवनिश्चोयु चोंको।

दशरथरयान आदर दीवनु विश्वामित्र ऋषि लगी। रामकेय लक्ष्मणाकय बलेयलो।

# यागरक्षेक



विश्वामित्रु रामाकेय लक्ष्मणाकेय गेवनु सरयु नदी तडान्तु रन्ना पवलो। तंका जायते पर्णशाला अणि ऋषि कुटीर दकेयिनि।

आश्रमांतु दोगांकेयि जलपान करेयने। अणि संगीने।

हे रामा ! हे लक्ष्मणा ! आवे संगुचे श्रधेन अयकाय। तुमि सन्न चाँ प्रायि। जायते कयरि मन्ना कोरनु जाँका मुकारि वचाक। तुंका ओड राज्य पालन कोरु अस्सल्लि प्राप्ति मेलका। ते आँव दित्ता। आंवे मोणचो मोंत्रु हृदिस्त करायि। यो मोंत्रु तुंका सग कष्ट रिष्टांतुयि शक्ति दित्ता।

उत्तले संगुन विश्वामित्रान 'बला' 'अतिबला' मोल्लोले दोनि मोंत्रु दिल्लो।

वोडे सन्तोषान दोगानियि मोंत्रु काणगेतोलो।

तेजावनु विश्वामित्रान दोगाकय, रान इत्ते कस्सि, यागु इत्याक कसलाक अणि राक्षस कोण, मनुष्य, ऋषि, पक्षि, मृग, किन्नर अणि

गन्दर्व तस्सि जाँवका जल्लोलो विवोर संगुन मन्ना केल्लो।

रामा ! ये रान पूडे मल्लभ मोणुय, कारुषमोणुय संगचे दोनि राज्यत अस्सिने।

अंगा ताडक मोणुय सुन्ध मोणुय तिगेलो पूतु मारिजानेंयि कोरनु रायाकयि जन्पथकेयि मारुनु नाशुअल्लो।

तस्सि ये घोर रान जल्ले।

एस्सीणा पयवटेन वचे जनपथाँक दोरनु भिसरानु मारनु पूँकि पटवण कोरनु तन्नि जीवन मुकारि वरतायि।

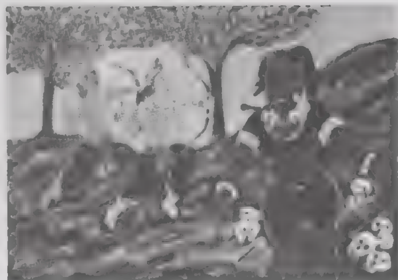
अंगेलो यागु पयकीले आणु गलनु बल्लाव करतायी।

ताडगेकेय तिगेले वर्गाक्य मारनु दंडाँका।  ते त तुंगेलो कामु।

जायते ऋषे।  तुमि यागु कराय अम्मि अंगसग  बोवनु जोयताई।

उतले संगुन रामुय लक्ष्मोणुय देवनु चंकीले।

# ताडका



विश्वामित्रु याग्यशालेंगेल्लो। होमहवन यथाविधि आरंबिने। धूप दीप जलेयने। भारी तेजारी अग्नि उँचारि उँचारि एयलि। धूप परिसर भोरनु जल्ले।

ये सग दिकुन कोपान राक्षस ओड अठहासु कोरनु एयनि।

माँसपिंठ यागग्नितु गालनु मलीमस केल्ले।

अठहास अयुकुन ऋषि मुनि सग यागशाले सुगुन भीवनु दवलि।

ये दिकुन रामुय लेक्ष्मणोयु दावनु एयले।

श्रीरामाक दिकुन मारिचु कोप्पान खंडेयकाणु एयलो।

ये दिकुन रामान बाणु सोल्लो। मारिचा लगोलो।

तो बोबाटि गालनु दावलो। सुबाहु रामा बाणु लगुन मोरनु पोल्लो।

ताडगे अठहास कोरनु रामा लगी एयलि। तिणे पथोरु रूक रुका वेलि। सग काणु मारनु विन्दीने।

रामान बाणु सोल्लो। बाणु लगुन ताडके मोरनु पोल्लि। ये दिकुनु राक्षस दावने गल्ले।

ऋषि मुनि ने रामाकेयि लक्ष्मणाकेयि पुष्पविष्टि कोरनु सन्तोषु दक्केयलो।

विश्वामित्रान संगीने हे श्रीरामा ! रघुकुल कुलोतमा !

धन्योसमि ! धन्योसमि।

चंकाय ! अणि अंका जनक राजधानि वचा।

विश्वमित्रान संगीने ।

केसलाक ऋषे ? रामान निंगीने।

तंगा एक बहुविशिष्ट जावनु अस्सिल्लो यागु चोंकूवता।

एययि वचा।

तेगय कोरनु जनकराजधानीक चंकीले।

# जनकपुरि

वचे वटेरि विश्वामित्रान संगीने रामा! जनकरायु भारि संपत्ति अस्सिलो। तका एकी दूव सीता। साक्षात लक्ष्मिदेवी। तिगेलो स्वयंवोरु।

जनकरायक देवान दिल्लेलित सीता। कसीमल्लारि यागबेगेक खोण्चवेलेरि भूमिसुकुन मेल्लेलि। तिंगेलो स्वयंवोरु।

जनकरायक महादेवान दिल्लेने एक "शैव धनुस" अस। तेकाणु बाणु सोल्लेरि तक सीत मालगालनू वरडीक करतेली।

वचे वटेरि गौतमाश्रमतु पवलि।

विश्वामित्रान संगीने। "हे रामा! मुकारि दिकुचेत गौतम आश्रम। तंग चोणु दोनि वर्तमानु उल्लोनु वोचु।

गौतममुनि मेगेलो ओल्लो दोस्तुत।

उत्तले संगुन विश्वामित्रु मुकारि चंकीलो।

जडक जावुनु रामालोपायु एकपथरालागोलो। आश्चर्य! पथरारि सुगुन एक बायल उठावनु एयलि।

भारीतेजस्वि। ये दिकुन गौतममुनि शिष्यगणय आश्रमा बायर एनि।

गौतमऋषिन विश्वमित्राक अणि रामाक स्वागत केल्लो।

सुसागतं ऋषे विश्वामित्रा! एयायि! जलपान करायि।



तीमेगेलि बायल अहल्य। मेगेले कोपान पथर जेलेलि।

अंगेले श्रीरामालो पायु लगुचा कोरनु तिंक मोक्षु मेल्लो।

तंगसुगुन विश्वामित्रुय रामुय लक्ष्मोणुय कोरनु जनकराजधानि पवले।

जनकरायन यथाविधि स्वागत दिल्ले।

जनकरायन विश्वामित्राक अणि रामाक अतिथिगृहांतु रबेयलो।

संगीने "हे महर्षे मेगेलि दूव सीतालो स्वयंवोरु त पल्ले।

तुगेले रामाचेरि मका ओडि प्रीति। तुम्मि स्वयंवराक एंका।

जायत जानकराय अम्मि एवु।"

ये संगुन सगठेय आराम कोरुगेल्लि।

# चापध्वंसन



जनकराजाधानी। स्यंवरमण्डपात्तु मोदेचि शिवधनुस। चारीयि भागांतु महाराय बसेलायि। तंचे लगि वोचून विश्वमित्रुय रामुय लक्ष्मुणुय बेसेले।

जनकराय परिवारसमेत एवनु सिंहासनारि बेसेलो। मंत्रि मुकारि एवनु संगीने "यो शैवचाप" काणु मंतुन बाणु सोड्चे दादुलाक सीता वरण्यमाला गलतलि। कोणकयि मुकारि एवयात।

ये आइकून एकेक-एकेक राय मुकारि एयले। धनुस काडु जावनतिने हरवुन मगलां गेल्ले।



ये दिकुन विश्वामित्रान संगीने हे रामा! रघुकुलोतमा वेच सीता तुगेलित। चाप काणु बाणु सोडि। मेगेलो आर्शिवादु अस्स। विजयी भवः

ये अइकुन जनकराय उठावनु मुकारि एयलो। अणि संगीने "ये धनुस मक्का ओड प्रीतीन महादेवान दिल्लेने। जायते काल जल्ले। आव निष्ठेन पुजीता। संसुद्ध मनुष्यात्म मात्र जंजे कयरिते ये। रामु दसरथाया पूतु। रघुवंशि, सूर्यवंशि मगेले सीता रामाक जामका। यो रामा तु ये धनुष काणु मगेले सीता वरडीक करि। विजयी भव! ये अइकुन हस्सुन रामु मुकारे एयलो अणि संगीने।

"हे देवांतो तुंचेकेले आर्शिवाद गेवनु अनुमति मगुन आव रामचन्द्र रघुवंशी ये शैवधनुष उबारनू सीता वरडीकोरु वता।

उतले संगुन रामु मुकारि सोरनु धनुष उबारले अणि दोरि ओडुन मन्दीलि। ओडेशोब्दान धनुष मोल्ले।

जनपथांक रामाने सामर्थ्य दिकुन ओडु आश्र्चय दिस्सने।

जनकमहारायाक ओडु सोन्तोषु जल्लो। रयान घोषण केल्ले। "अंका सोन्तोषु जल्लो। अंचकेले उत्तर पालनकोरु सन्नधत।

विश्वामित्रान उठावनु संगीने।

हे महाराया रामाले बपुसांक दशरथरायाक जाणोंका स्वयंवरा आँका जल्लेने कराय।

जायत ऋषे ! अम्मि दशरथराय दूत बेलेयेतायि।

दसरथराय परिवार समेत जनकपुरि पावलो। जनकराय यथायोग्य आदर दीवनु दशरथरायाक स्वागत केल्ले।

दशरथरायन जनकरायालगि संगीने "हे महारायान अंका चेल्ले चोगु जाण। एक्के प्रायेचे। चोगालीय वरडीक एक्के मण्डवाँतु कोरका।

तोत मेगेलो मोहु।

जायत महाराया। अंकाय ओडु सोन्तोषुत जनकरायन संगीने।

मगेले बौडाण्क चेल्लि अस्सय।

यथाविधि वसिष्ट भोडममान श्रीरामाक सीता केरान वरण्यमाला गलेयिली। तेस्सी भरतान माण्डवीक वरडीक केल्लि।

लक्ष्मणकुमारन ऊर्मिलाकेयी शत्रुग्नान श्रुतिकीर्तिके वरडीक केल्लि।

रामाले पराक्रमा पसून दशरथ महारायक ओडु सन्तोष जल्लो।

रामा सीता वरडीक के वी वोर अयोध्ये जनपथांककेलेयिलो।

दशरथराय परिवार समेत बन्गारा घोडे बन्डिरि बायरेस्वरलो।

# श्रीराम अणि परशुराम

अयोध्ये वचे वटेरि परशुरामन श्रीरामाने रथ दोरनु रबेयने।

अणि ओडान संगीने। रामा! तू केल्लेने ओडि अनीति जल्लि। अम्मि ओड शिवभक्तुत। शिवधनुस तुवे मोल्ले। सबारि ओडकाय नक्का।



परशुरामालो कोपू दिकुन जनपत भिल्ले। श्रीरामु हसूनूचि परशुरामाले मुकारि एयलो अणि संगीने।

महर्षे नमोवाक्यं! इक्षांकुवसचे दशरथरायलो पूतु रामुत आव। तुजे घत्तीरि इत्ते कोरचे? संगाय।

"रामा चाँग। तूवे शैवचापु मोणु ओडकाय दर्केयिलि। ते ओल्ले कर्यारि जावनू अंका दिस्सना। तु ओल्लो समर्थु जल्लारि अंचे अत्तां अस्सिले ये वैषणवचापु काणु बाणु सोणु दकयी। तवलि तुचेरी अमकायि ओडि प्रीति दिशतली।"

"जायत परशुरामऋषे ! तुमचकेलो आर्शिवादिनि आव करीन।" रामु मुकारि एवनु धनुस उभारनु बाणु मंदीलो अणइ निंवकीने।

"हे परशुरामऋषे ! रामान बाणु सोडु जावनु मंदीलो। लक्ष्य दकोंका तुंकेले धर्मु ! संगाय रामालो बाणु सभा सोडु जायना।

जायत रामो। जायत।

तु समर्थु सत्यसन्तु बुद्धिवन्तु।

तू बाणु मेचेरी सोडी। आवत तू! अमचकेलो। इतःपरयन्त अम्मि केल्लेने पुण्यतपस्य, यसस सकडेय तुक दित्ता। अणि अस्सिलो कामु-धर्म संरक्षण नीतिपालन तू कोरका। तूंची धर्मु! तूँची सत्य! तूंची नीति। यसस्वी भवः।

परशुराम सोडता। श्रीरामु रबता।

स्वस्ती !"

श्रीरामा तेजस्वी कोरनु। परशुराम तपस्य कोरु जावनु महेन्द्रपर्वतारि चंवकीलो।

दशरथरायक अणि परिवारॉक ओडु सन्तोष जल्लो। संकडय उत्साहान अयोध्येक चंकी।

# संशुद्ध नगरि अयोध्या



सीता समेत पवलेले रामाक अणि बंडांक। अयोध्ये जनपतानि ओड स्वागत दिल्ले। नगरि कोडि-तोरणानि अलंकार कोरनु पुष्पफलानि स्वागत केल्ले।

तस्सी दशरथरायूयि पुतय सुखान सन्तोषान कोशलराज्य पालन कोरचो कालू।

एक दिसू भरत कुमारलो मामु 'युधाजितरायु' अयोध्येय एयलो। दशरथरायन युधाजित रयाक जलपान कोरोवूनु कुसल निंवगीने।

"युधाजित महाराया" कसलो विवोर गाँवांतु कुडुबांकय सौख्यवे?

वय दशऱतरया तुचे कृपेन संगटई सौख्य।

अमगेलो बच्चो भरताक एदे काल गाँव वोर रबोंका मोणु ओडि

आशा।

चाँग ! जायत। बावजा लगी रबून एवो।

वराय तुम्मि !

अंकाय ओडु सन्तोषू !

भरताकुडाँतू शत्रुग्नकुमारुयि गेल्लो।

दीस मास जावनूय मास वोचोनू वर्ष जावूनूय कालू मुकारि गेल्लो।

तस्सि अस्सिले वेलेरि दशरथरयान पुरोहितु वसिष्ट भटमालगि निंगीने।

“भटमाँ अंगेले रामाक युवराय कोरका। मक्का प्राय जल्लि।

जायत महाराया ! चांग कयरि। अंका चा दीसु चोवु।

दशरथरायन तजकेलो मोहु बयलालगि संगीलो।

संकटाँक ओडु सन्तोषु जल्लो।

जनपतानि रयाक सहमति दिल्लि।

राजाभिषेका जावनू भंगलावुयि राजवीथीयि सग पुष्पफलानीय कोडि तोरणानीय अयोध्य नगरि भंगी केल्लि।

दशरथरायन सुमत्रा बोलोबून रामा अपेयलो।

राम एयलो अणि अप्पा पायु दोरनु पायपोल्लो।

दशरथरायन पुत्ता उडकरावुनु आलिंगन केल्लो।

अणि लगि सिंहासनारि बसेलो। रयान राजाभिषक कार्यरि रामाक कलेयने।

रामान रायालोय जनपतालेय मोहाक अनुमति दिल्लि।

श्रीरामलो राजाभिषेक विवोर भेरि वजून जनपतांक केलेयलो।

रामाले औसूँक ओड्डु सन्तोष जल्लो।

# मन्दरा अणि कैकेयि



राजाभिषेका दीस पावले। कैकेयि दिकुक मन्दरा पावलि। मन्दरा कैकेयिली दासि। महा चूडिवात्ति-कुशुंभी। मन्दरेन कैकेयि लगि उल्लोवचा आरांबीने।

कैकेयिक ओड दुःख दिसने।

"मन्दरे तू इत्ति संगता? रया लगि आँव कस्सि संग्चे? रामु मक्का भरता मटेचि। दोंगय मक्का एकेमट। रामूचित योग्यवन्तु"

ये अयकून मन्दरेन दुसेरि संगीने "हे महाराणि! अयकायि। रामाक रायु केल्लारि तुगेलो भरोतु वटेरि जत्तोलो।

तक्का कसने ओडपण मेलना।"

मन्दरेन संगिने अयकून कैकेयि कोपु एयलो।

"मन्दरे तु कसन मन्डा? जागदिसा चाँग उल्लोवुचा कलणावे तुका?

अमचे केलो नयवे रामु? रामुय भरतुय अंका एके मट्ट। तुंक कलना वे ते?

सोडि ! बान्डि सोडि ! मन्दरेक कैकेयिन केलुकेल्लो।

मन्दरेन सोल्ला। तीणे संगीने राणि देवी !

"अयकाय ! तुका अत तसी सक दिसतेने !

तुजे मन्न शुद्ध। बल्लाव कायि ना। दलारि दीस वच तसी कौसल्येक वोडपन चडतने। राया मुकारीय जनपता मुकारीय तू सानि जतली। तेंत मेगेने ओडु संगड। मगीरि रोणु कयरि न। अत्त जांका जलेने कोरका।

"तू इत्ती संगता ?"

"तेंची। रामालो राजाभिषेक रबोंका। भरता रायु कोरका।

तवलि तू महाराणि जतलि।" "तें कसि"

ये अयकून कैकेयिने मन्न सन्त-सन्त वायड जल्ले। कैकियिन निंगीने। आवे रयालगी कस्सि संक्चे मन्दरे। आवे इत्ति कोरका ?

"एक वाट अस्स। रायन फूडे एक उत्तर-वोरु दिल्लोलो उडकासु असवे ? देवासुर युद्धांतु ?

अस्स ! अस्स ! उडकासु अस्स।"

"तोवोरु तु अत्त रयालगी मगुका।

कस्सि निंगुचे ?

एक उपाय अस्स। तु संगडान पोडुका।

रायु एवनु निंगीतोलो।

तवेलिरि तू निंगुका।

मन्दरेन संगीने अयुकुन कैकेयि आलस्यान पल्लि।

# कैकेयि अणि दशरथरायु



कैकेयि उटायाना नयना खायना मोणू अस्सिलो विवोरु मन्दरेन दशरथरया केलेयलो।

रायु धावनु राणि दिकु एयलो।

रयान राणिलागि निंगीने कैकेयि तुका इत्ति जले? अम्मि कसने कोरचे?

कैकेयि कायि उल्लोनन्नत्तिने पल्लि।

ये दिकून मन्दरे एयलि। "महारया कालि राणि आवय उल्लोंचे वेलेरि रामाले पटाभिषेका कयरि उल्लेयिने।

ते चांग कयरिनेयवे? सन्तोष अस्सिने कयरि। संगड कसने?

इत्तया एस्सि पल्लिया?

रयान निंगीने।

महारायाा महाराणिक सोल्प संगड अस। मन्दरेन संगीने अयकुन रयान निंगूने। कसलाक संगड?

रामक रायुकेल्लरि भरतुय कैकेयि भायर जंतनी। ते एक संगड।

तुम्मि निंगाय।

कसने भय महाराणि? तुजेरि मका ओडि प्रीति मोणू कलनावे?

रयान निंगीने।

संगड निवर्तीक आव कसने कोरचे?

तुम्मि मक्का एक उत्तर दींका। राणिन संगीने। कसने उत्तर?

भरताक युवराय कोरका। रामाक चौधा वर्षांक वनवासा बोलूंका।

कैकेयिन निंगिने अयकून दशरथरायान संगडान निंगीने।

कैकेयि मेगेलो वोरु ये लेकान तू वाइट कायरा जावनु निंगीतलि मोणु मक्का कलना अस्सिने।

देवा ओडु खातोगु जल्लमु। अणि इत्ते कोरचे।

दशरथराय संगडाँतु पल्लो।

ये दिकुन सुमन्त्रान कायरि रामा कलेयिनेऊ

रामु दावुनु रया दिकु एयलो।

बौसू दिकून रामाक ओड संगड दिसने।

अप्पा रामान इत्ति कोरचे? साँग अप्पा बेगेक्य राज्याबेगेक्य जावनु राम इर्तेकोरू सज्ज त।

अन्यायु अप्रिय कायरु पुत्ता लगि संगूजायनत्तिने दशरथराय संगडान मत्ते बौगून बसेलो। रामन बंप्सूने संगड दिकुन औत्सूलगि निंगीने।

कैकेयि अम्मा अप्पा इज्जने। दुःखा कारण संगाय।

भींका नक्का। रामाक औसुबपसूने कसने संगड नीवारण कोरु सामाथ्य अस्स। अम्मा साँग।

ये अयकुन कैकेयिन संगीने। रामा तूवय भरतुय मक्कायि अप्पा केयि एड्ड लेकान। दल्लरि भरताक राय कोरका मोणु मेगेलो आग्रहु। ते आवे अप्पालगि मल्ले।

उत्तलेवें? सभा सुक्के कायरि। रामु तैयार। अम्मा बंपसूने चग्पण जावुन वनवासु स्वीकारत।

अत बायर सरता।

राम गृह-गृहस्ति सुख आडंबर जावनु।

राज्यकार्यांतु विल्लंब अल्लोना। मेगेने कायरि धर्मरक्षण। धर्मं शरणं गच्चामि। रामु वच्चावता। अप्पाने उत्तर पालन कोरका पुत्तालो धर्मु।

रामु विड मंगीता। वनवासू जावनू दिकु।

रामु देवनु बायर गेल्लो।

रामान सुमन्त्रा उद्दीलो अणि संगीने। "सुमन्त्रा आवु वनवासा ओत्ता भरताले राजाभिषेका जाँका जल्लेने कोरका।

रामु वनवासा बायर सोरलो मोणु अयकुन जनपत रामा कोट्टारा मुकारि एयनि।

श्रीराम जडावल्कलं नेस्सून एयलो। जनपत संगडान पायपोणु रबीनि।

रामा मगलान सीता। तंचे मगलान लक्ष्मूण धनुर्धारी जावुन।

सीता एत्त दिकून रामान निंगीने। "देवी सीता ! कसेने ये ? केयी वत्ता ? मेंचे मगलान रन्नातूवे ? नक्का नका ! जायनेय। रन्नातू ओड कष्ट जताले। जनकरया दूव ! दशरथरया सून ! बमणामगलान रन्नातू ! जायनेय।

ना महारया। तस्सिनेय। बायलेलो धर्मु ! बमणालगि दुःखातुय सुखातुय। रामा बायल आव सीता रामा मगलान। रामा नक्कजल्लेने सूख सीताकेयि नक्का। यो महाराणि ! अंका नियती वाट चंकायि।

सीता ! तूंचि सत्य ! तूंचि धर्मु। तूँचि ऐश्वर्य।
ये अयकुन लक्ष्मणाक कोपु एयलो। अण्णा रामा तू कसने उल्लेता ? कुलाकपमान एत्ता। कोट्टारांतु कनकसिंहासनारि सुखान रामालगी बेसूका जलेलि। पट्टमहषि ! रन्नातू ! कंण्टेतु ! पथरांतु ! मक्का दिकु जायनेयि।

लक्ष्मणालो कोप दिकुन जनपत बिंल्लि। रामान संगीने। लक्ष्मणा ! तू समाधनान आयक। मक्का राजधर्मु ! पुत्रधर्मु ! भर्तुधर्मु ! भार्तु धर्मु !

ये सग एकेलकान। एकेसमयारि पालन कोरका।

तंतू विग्न आडका नक्का। अंका धर्मु सोडु जायनेय। ये अयकुन लक्ष्मणान संगीने। अण्णा तू इत्ति संगता तोच मगेलो धर्मु।



अण्णाकेय ओन्नेके संरक्षण दींगा जलोलो मगेलो धर्मु। चंकायि आवे एत्ता।

श्रीरामुय सीताय लक्ष्मुणाय सुमन्त्रान अल्लेले तेरारि चल्लि।

सुमन्त्रान तेरु सोल्लो। अयोध्यापुरि शोकामूका जल्लि।

श्रीरामालि घोडा बान्डि दंत्ता चोवनु रयूय राणियोय दुःखान रबीनी।

7963



# वनवासाक

रामाले राजाभिषेकाक सडके एयले। युवरायुय राणी रन्नांतु! वनवासा प्राय जल्लोलो रयूय राणीयोयि कोट्टारंतु!

जनपतांक ये दिकून संगड दिस्सेने। ये कसलि नीति? कसलि नियति?

जनपतानि एत्तपेत्तांतु उल्लोंचा आरांभीने।

भारतवर्षा नियति अस्सिवे? देव देवा!

यो एक दुरन्तुवे? की एक नवे जीवन रीति समारंभुवे?

रामुय सीताय लक्ष्मुणुय कोरनु वनवासा गेल्ली।

रामा मगलान जनपतेय चँकीले।



गंगा तड़ा पँचाकोरनु रामुय सीताय लक्ष्मुणूय रथारिसुकून खाल देविनी।

रामान जनपतालगी संगीने "तुम्मि भींका नक्का। रामु अप्पाने उत्तर पालन कोरनु वापस एत्ता। समाधानिनी तक तकेले गावाँ वचाय।"

उतले संगून रामु सीतासमेत गंगा तार कोरनु गेल्लो।

गुहान रामाक मुंचवारि वेल्लो।

ते दिस्सा रामु सीतासमेत गुहानले गरलाक रबीलो।

दुसेरे दिस्सा पल-फलारी उठाउन

गंगे नावुन जलपान कोरनु चित्रकुडांक चँकीनी। तंगा लक्ष्मणान सने एक पर्णकुडीर मन्दीने। रामूय सीताय लक्ष्मुणूय कोरनु तंगा मेल्चे फलमूल खावुन तन्नि सुखान रबीनी।

# रामान सोल्लेलि अयोध्यपुरि

रामान सोल्लेलि अयोध्य नगरि ओड सकडां जल्लि। जनपताने आशा सोल्लि।

दशरथरायु ओड संगडात् जल्लो।

इत्ति पसुन एस्सी जल्ले? कुडिलता कारण! मन्दरा कारण! कैकेयिय ओडि निराश पल्लि।

रामा रामा! मोणु मोणु! दशरथराय पुत्रदुःखांतु बुंडोलो। अणि इत्ते? कोणा काय कलना। सकडाँतूय निराशेन्तूय! दशरथरायक पोरणो उडुगासु एयलो।

एते वर्ष फूडे मृगये गेल्लोलो। तंगा एस्ति उद्दा पित्ता मोणु अठोन बाणु सोल्लो। लगल्लो एक मुनिकुमराक। तो मोरनु पोल्लो। बोब्बाटि अयकुन रायु दावनु पवलो। तंगा पुत्ताक वोंडीनतु काणु रोडचे अम्मा बपसु दीकीलो। रया दिकून ते मुनीने शापु दिल्लो। 'तुवेय मजे मट्टेचि पुत्र दुःखांतु पोडो। देवा! मक्काय मोरु कालु पवलो। ते कारण दशरथरयान पुत्रदुःखान प्राणु सोल्लो।

ये अयकून वसिष्टु महर्षि दावुन कोट्टारांतु एयलो। भरता उदूक दूताक बेलेयिलो।

# भरोतु अयोध्येक

वसिष्ट महर्षिन बेलेलो दूत केकिया राजाधानी पवलो।

ताणे संगीने "हे भरतकुमारा तू अत्ते अयोध्य पाँका। भरोतु तवलि अयोध्येक बायर सोरलो।

भरता दूतालगी निंगीने। "इज्जल्ले अयोध्येंतु? कसेन सग्चे कुमारा? वसिष्ट महर्षिन तुक्का उदून आडु संगीने। विवोर अयोध्यांतु मेलतोलो।



गावाँतु पंता पंता। भरता इतकी दिस्सेन। एकी मूकता! विजन वीथी। कसेन की विपत्त जल्लेने अस्स। अप्पा अण्णा! बाज़ार बन्ध?

घोडा बन्डीरि सुखून देवनु भरोत दावनु अम्मा कोट्टारम पवलो।

अणि निंगीने अम्मा कसने जल्ले।  अप्पा केयी। पुत्ताने उत्कण्ट दिकुन कैकेयि संगीने। "भरतो अणि संगून कसने कायरि ना। चोंकु असिन्ने चोंकीने। तुगेलो बपूस गेल्लो। अम्माने वर्तमान अयकून भरता निंगीने। अम्मा कसने संगात तु? तुक्का इज्जल्ले?  ये अयकून कैकियीन भरता लगी संगीने। भरतो तू कोप्पु पाणा आव संगुच्चे आयक।"

"साँग अम्मा साँग"

"तुगेलो बपूस गेल्लो तुक्का युवराय कोरका मोणु आवे संगीने। रामाक वनवासा बोलोंका मोणूय अप्पा लगी संगीने।  ते अयकून रामा वनवासा गेल्लो। तेंची कारण।"

"अम्मा तू कसने केल्ले मेज्जे खतीरी?"

"आवे इत्ति कोरचे? तुगेले चँकपाण केल्लेने। तुक्का राय कोरका मोणूय अण्णाके वनवासाक बोलोंका मोणूय।"

"अम्मा अप्पान इत्ति संगीने?"

"इत्ती सँकचे। अण्णा वनवासा गेल्लो। अप्पान रामा रामा! मन्टा मन्टा! प्राणु सोल्लो। अनिचे कायरि तू कोरका।  राज्यभारु चोंका।"

ये अयकून भरोतु वसिष्ट महर्षि दिकुन अप्पालि शेषाक्रिया केल्लि। ते जावनु औसूंचे लगी संगीने। "रामा नक जल्लाने राज्य मक्कायि नक्का।  आवेय अण्णा मगले रन्ना वत्ता।"

उतले संगुन भरतूय रामा सोन्दून रन्ना गेल्लो।

# भरोतु अणि रामु

चतुरंगी सेनेकेय गेवुन एंचे भरताक निषाद रयान दूर सुबून दिकीलो।

श्रिंगवेरे सीमा पंचाकोरनु निषाद रयान भरता स्वागत गेलो अणि रामा अपेयलो।

भरता ओडे प्रीतिन रामान आलिंगन कोरनु स्वागत केलो।

भरतान अण्णाचे ओन्निचे पायु दोरनु आदर दिल्ले।

अप्पनेय अम्मानेय केल्लेने दुषकर्माक भरतान क्षम मगीलि।

रामाक रायुजावनु बेस्सोवुन अण्णा पादसेवक जावून बेस्सून राज्यकयरि कोरू मोणू भरतान रामा लगी मल्ले।



नाः भरतो नाः अप्पाने उत्तर रकूचे अंगेल्लो धर्मु।

आव रन्नातूचि चौध वर्षाक; भरतो रायुजावनु राज्यपालन कोरनु प्रजाक्षेम चोवून बस्सुका। तो त अंगेलो धर्मु।

'भरता!' ते दिकून तू वापस अयोध्येक वंच। राज्यपालन कोरनु अवसूक सूख्य सन्तोषु दी।

अण्णा! आव कोट्टारा रबुन्ना। अयोध्येनगरि बायरे सन घरा रबुन अण्णा खतीर राज्यपालन करीन।

जायत भरतो जायत। तुक्का अंचेकेलो आर्शीवादु अस्स।

जायत अण्णा तुगेने ये पादूक मका दी। ते रया सिंहासनारी दोवोरु पूजन कोरनु आव प्रजाक्षेमु चेयता।

रामान पादुक भरता दिल्लि। भरोतु पादूकयि गेवनु अयोध्येक गेल्लो।

रामु चित्रकूड सोन् दण्डकारण्या गेल्लो।



# विराड्

रामु अणि लक्ष्मोणु सीताकेय गेवनु दण्डकारण्य पूर्ण जावनु बोवनु चोयिलि।

ऋषिस्वरांक दिकून तंचेकेलो क्षेमु चोनु तंगेले आदित्य स्वीकार कोरनु सुखान दीस कल्ले।

तस्सी अस्ताना एक दीसु पर्णशालेंतु बेस्सले सीताक वीराड मल्लेले एक राक्षसान बिसरायलि।



सीतान ओडान बोबाटि गली। ते अयकून रामुय लक्ष्मूणय दावनु एयले।

वागामट्ट्टे अस्सिने विकृतरूप ! दंष्ट्र ! तो भीषण अट्टहासान सीता सोनु रामा लगी एयलो।

ते दिकून लक्ष्मणान तक्का दोरलो। ये दिकून दावनु एयलेल मुनिने संगीने। हे रामा ! तो विराड़ मोलेल्लो राक्षसु तक्का सोडुग नक्का। अंका ओड कष्ट दित्ता।

विराडु लक्ष्मणाक दण्डुन दावलो। विराडु दूर गेल्लो अणि शूल काणु लक्ष्मण समंसोल्ले। ये दिकून रामान अस्त्र सोल्ले। रामाने अस्त्र लगुन शूल कुट्टी जावनु विराडाक लगेने। तो पोल्लो। रामा !देवा आव मुनिशाप कारण राक्षसु जल्लो। अत्त मक्का मोक्षु मोल्लो। आव प्राणु सोडुता। तुम्मि सम चंकाय तंगा शरबंगाश्रमां पंत्तेले। उत्तले संगून विराडु मोरनु पोल्लो।

वीराडा ने देह दहन कोरनु रामूय लक्ष्मोणूय सीताकेय गेवनु शरबंग आश्रमा चंकीनि।

# शरबंग ऋषि

आश्रमांतु पवलेले सीता-रामाक शरबंग ऋषिनेय शिष्यगणानि कोरनु स्वागत केल्लो। जलपान करेयने।

शरबंग ऋषिन रामा लगी पूर्वपरंपरे पशुन परस्पर अणि एंचे कालू

कस्सी इत्ते इत्याग मल्लेने कायरे उल्लेने। ऋषीने संगीने "रामा ! तूंचि धर्मु तूंचि सत्य तूंचि अंक्का रकूका।



आवाँ तुक्का दिक्कु जावनुत उत्तले काल तपस्य करतानो। अणि आव विडा मंगीता। देह सोडता। देवांतो तुम्मि मुकारि दिकुंचे वट्टेन चोंकाय तवेली सुदीक्षण ऋषीले आश्रमांतु पंत्तनी।

उत्तले संगून महर्षिन प्राण सोल्लो।

ये जावनु तंग अस्सिल्ले मुनिगण रामा लगी एयनी। श्रीराम देवा अंका ओडु सन्तोष पवलो। तू अंचकेले रक्षण केल्ले। अंगा रबूका अंका अनिकीय रक्षण कोरका। रामान संगीने। जायत ऋषिवरियांन्तो अंचेकेलो जन्मु घर्मा रक्षणा जावनु। ते बेगे अम्मि बोंताय। तुम्मि सन्तोषान याग यज्ञानी लोकांचे अणि संस्कृति संरक्षण करायी। मुनिवरांक समाश्वासु दीवनु रामु सुदिक्षण ऋषीक पोलोंचाक सीता लक्ष्मणा समेत चंकीलो।

# सुदिक्षण अणि अगस्थ्य



रामु सीता समेत सुदिक्षणा ऋषि आश्रामांतु पवलो।

ऋषिन स्नेहान आदर दीवनु राम लक्ष्मणाकय सीताकय उपचार दीवनु कुशल उल्लेयने।

रामुय सीताय जायत काल सुदिक्षणश्रामांतु सुखान रबीनि।

एक दीसु रामान निंगीने। "हे ऋषिस्वरा अंका अनकेय बोवनु चोंका मोणु अस्स। अगस्थ्य ऋषि पसून जायते अयकिने अस्से। तंका पोलनोनु आर्शिवादु काणगेवका मोणु अस्स।

तंचेकने समुद्रपाना कथा अयकील्लि अस्स।

वाट संग्चे। अम्मि दिकून एवू।"

सुदिक्षणा ऋषि ने वाट संगून दिल्लि। रामु अणि सीता अणि लक्ष्मूणूय कोरनु चोंक्कुन अगस्थ्याश्रमांतु पवनि।

विन्ध्याचला अहंकार वरुणलो गर्व वातापीलो कुटिलता सक दमन कोरनु तंकाय जनपतांकय मर्यादय संस्कारूय मोन्नाकोरनु दिल्लोलो अंगुष्ट समान अस्सिल्लोत अगस्थ्य महर्षि। ज्ञानि, बैरागि, निरभय, अणि निष्टे अस्सिल्लो ऋषित अगस्थ्य महर्षि।

आश्रामां बस्सेल्लो अगस्थ्य महर्षीन रामुय सीताय चोंक्कून एत्ताय दिकीने। आश्रामां लगी पवलेले रामाक महर्षीन आदर दीवनु, स्वागत केल्लो।

महर्षिले पाय अप्पोन रामाने सीतानेय आदर दिल्ले।

महर्षिने रामालगि संगीने "हे रामा! तु योगवन्तु ओडु सामर्थ्य अस्सिल्लो।

ये सुवर्ण धनुस, सूर्य शोभा अस्सिने। विश्वकर्मान केल्लेने। ये इन्द्र तुणीर अणि ये खंडे काडि। ये सग तुजे बेगे दवरलेने।

ये काणु गेवून धर्मरक्षण अणि नीति पालन कोरणु योग्यवन्तुजा। तू एसीणान एत्तोलो मोणु अंका केल्ताने। हे राघवा! तू ये काणके! ये भारत भूमिचि यज्ञ संस्कृति वेद संस्कृति रक्षण कोरणु सूर्यतेजस्वी अणि यशस्वि जा। तेवलि अम्मि धन्यजतायि।"

रामान आदरान अगस्थ्य महर्षि लगि सुखून धनुस अणि खंडे काण गेतने।

अगस्थ्यमुनिक ओडु सन्तोष जल्लो। मुनिवर्यानी संगीने "हे रामा! तू इक्षांकु कुला अभिमानत। सीता देवी तुजे लगी ये रन्नांतु कष्ट नष्ट काणु बोंता इत्ति मल्लाारि तुगेलि धर्मपत्नि, पतिवृत त। तुमि सग एयनि दिकून अंगेने आश्रम पवित्रजन्ने देवु तुंका चाँग दित्ता। विजयी भवः"

महर्षे तुंचेरि अंका ओड आदर अस्स। अंका तुम्मि देवा समान। अम्मि विड मंगताय।

रामान संगीने अयकून अगस्थ्य महर्षि मल्ले। रामु तुम्मि सम चंकाय गोदावरि तंटून मुकारि वचाय। तंग पंचवडि चा गाँवु।

रामु सीता समेत चोंकीलो।

# पंचवडि



ते जांवुन उणे चोकून पंचवडींतु पवनि।

गोदावरि तडेक फल-पुष्प लतादि समर्धीन अस्सिने सन् एक गाँवुत पंचवडि। ते गाँवंचे तीन्नीय भागाक गोदावरि नदि।

लक्ष्मणान तोण काणु एक सने घर मन्दीने। चारीय तंतू कवडि मंदीलि।

"चोंचा चा भंगी लक्ष्मणा! आयोधनातुय निर्माणातुय" रामान संगीने।

"अण्णा! रामा! अम्मबंपसूनेय मलगठानेय आर्शीवादानी अम्मि सन्नोर्भूय सोमयूय चोवनु संकड तारण कोरू प्राप्त मेलता मोणु दिसेरा।"

"वयि लक्ष्मणा अम्मबपूस ! देवगण ! अंका रकीताय !

चोय ये खोर रन्नातुय सीता सन्तोषान गींत मोणु दावनु बोवनु खेलता।"

तस्सी तन्नी।

पंचवडींतु सुखान दीस मुकारि वेल्ले।

# शूर्पणका

पंचवडींतु एक दिस्सा एकी बायल! चोंचा बहु सुन्दरी रामालगी एयलि। अणि निंगीने।



हे देवा तू चोंचा चा अस्स। तुक्का दिकचाक मक्का भारि सन्तोषु पवलो। आँव तुगेलि बायल जावनु रबन। तुजि सेव करीन! इत्ति संकता?"

श्रीरामाचेरि मोह मुग्ध जावनु तीणे निंगीने।

रामु तिक चोयलो। एकी माया मोहिनि! कसि ये खोर रन्नांतु। रामान हस्सून निंगीने। "हे सुन्दरी तू कोण? कस्सी ये रन्नांतू पवली? तू कोण मोणु मक्का केलना। आंव कोण मोणु तुक्काय केलना। मगीरि कस्सि तु वरडीके पसून निंगीता?"

अरे बाहल्या तू चोंचा चा दिस्सता। जल्लारियि तुक्का बायल कोण कस्सि इताक मोणु कायि केलना। जीवित इत्ते इत्ताक मोण तुक्का

कलना मोणु मक्का मोन्ना जल्ले। तू एक बेडदू ! आव इत्ते संग्चे ?

हे सुन्दरी तुक्क आंव कोण मोणु केलनानवे ? तुक्का मक्का नक्का। रामान हसून संगीने।

“चोय यी रबेली बायल मेगेली सीता तंगा रबीला। मेगेलो बावु लक्ष्मुणा तजी लगी वेच। तजे लगी बायल न। तें त तुक्का चांग।”

ती सम लक्ष्मण लगी गेल्ली। “आंव तुगेली बायल जावनु रबतवे ?”

“ना सुन्दरी नाः जायनेय ! आंव अत्त तंचेकेलो दन्दकारी। ताणे संकुचे अयकू मात्र जत्ता। वेंगले कसेन कोरु जायनेय।”

ये अयकून तिक्का मानहानी दिस्सेली। ये दोंगय बौंड मक्का केलु कर्तायते। तंक्का एक सिकोंका। आंव कोण मोणु कोलोंगा।

तीणे सम अस्सिने तिंगेने भीषण रूप दोरनु दावनु ओच्चुन सीता देरली। तें दिकुन लक्ष्मणान तिगेने नांक कतरले। दुखेन ती रोणु दावली। तीं त रावणा बेयिणि ‘शूर्पणके’।

# खर-दूषण



शूर्पणका बोबाटि गान् दावनु खरा मोणु नाव अस्सिल्ले तिगेले बंडा लगी पवलि। शूर्पणकेने विवोर दक्कूल बावा लगी संगीने।

विवोरु आयकुन तक्का भारी कोपु एयलो। बयणी अपमान केल्लेलाक सबा सोडु पाणा। तक्का अंगेलि शक्ति मन्ना कोरनु दींका।

खरान संगीने अयकून तगेले चौदाजाण शिपाय दावनु रामा लक्ष्मण दोरू पवनि। एत्ता पेतांतु ओडे जगडे जल्ले।

रामानेय लक्ष्मणानेय कोरनु सक्टांक मारनु दंण्डायिनि।

रामान अस्त्र सोल्ले। अस्त्र लगून मोरनु गेल्ले। ये दिकून खरु दावनु एयलो। तक्का रामन खण्डन कत्तरलो।

ये दिकून शूर्पणकेन तिगेले दुस्सेरो बांडु दूषणा लगी संगीने। "तू इत्त चोवनु रबीला ?"

वंच वोचुन ते दोग्गाकेय मारनु दंण्डाय।

ते दिकुन रामान लक्ष्मणा लगी संगीने। लक्ष्मणा तू सीता चोय आंव तक्का दंण्डायन। रामान दूषणा केय खण्डान कत्तोर सोल्लो। ये दिकुन सीता देवी दावनु एवनु रामाक आदर दिल्ले। हसून संगीने। लक्ष्मणा चोय। इस्सि जाँका ददूले जल्लारि।

# शूर्पणका अणि रावोणु



अपमान् ! अनिवच्चा !

शूर्पणकेक कोपुय संकडे दिस्सेने।

रावोणु ! त्रिलोक चक्रवर्ति।

मेगेलो ओल्लो आणु।

शूर्पणका रोणु दावनु लंके रावोणु मुकारि एयलि।

अणा ! त्रिलोगनाथा !

वीर शूर पराक्रमी ?

चोय ! मेगेले रूप ! सग तुगेले खत्तीरी !

मेगेले खत्तीरी ! बयणी शूर्पणके तुक कसने कोणे केल्ले ?

अण्णा ! रावोण ! वयी तुजे खत्तीरीच ?

तुक्का केलनावे श्रीरामु अणि लक्ष्मूणु अयोध्यारायु दशरथरयाले चेल्ले।

चा तेजस्वी नचे कुटातु एक सुन्दरी ! ती तुक्का ओवसुचि ! तिचे खत्तीरी गलाटे पले आवय लंक्ष्मोणुय जावनु !

ताणे खंण्डे काणु मक्का वेच कोरु एयलो। मेगेने कान अणि नांक कत्तरले। आव दावनु अंग पवलि। मेगेलो अपमान तुचे खत्तीरी ! तुक्कात अपमान पवला। अण्णा खत्तीरी बयणि !

अण्णा करी परिहारु।

बयणि मक्का ओड दुखः तुक्का पलेयलारि ! आव कसने कोरचे तूचि सांग।

अण्णा ! रावणा ! तू ते रामा दोरनु दोनि तपय तस्सी ते लक्ष्मणाकेय दोगय पयिकीले ! एक बयले लगी इस्सी जायतेव ? तूंचि सांग।

रावणा भारी कोपु एयलो। सिंहासनारि सुखून खूद मारनु उटायलो।

जायत शूर्पणके अंक्क वचा। ते रामाकेय लक्ष्मणाकेय एक सिकोंका।

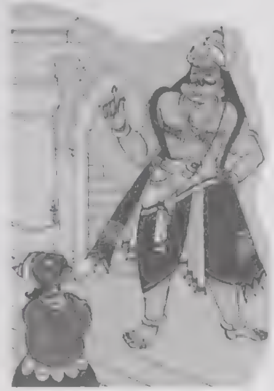
रावोणु सम वोचुनु पुष्पक विमानारि चोल्लो ! अणि दण्डायन गेल्लो।

# मारीचु अणि रावोणु

रावोणु सम वोचून मारीचा दिकेलो।

मारिचान रावोणु दिक्कुच आदर दीवनु कुशल निंगीने।

रावणा कसेल विशेषु।



तुगेलि मण्डोदरि चेरटूव सौख्यवे?

इन्द्रजित्त इत्ति करता?

सौख्या मामु। सक्ड सौक्य!

आंव अत्त एयला तसने कसेन कायरि उल्लोंचा नयि। ओडे एक संकट लोगटोवचे नादलारि लोगटो कडिचे कयरि।

रावणाने उत्तर अयकून मारीचान निंगीने।

रावणा! कयरि साँग।

मारीच ममा अंगेले बयणि शूर्पणगेक ते रामा अणि लक्ष्मणान अंग भंग कोरणु सोलिया। ती रोणु दावनु एयल्या ' ` ऋका समादान कोरका दलारि। रामा अणि लक्ष्मण दोरका।

तुगेलो सहायु जायि।

उत्तलेवे कयरि सोडि आवय एत्ता।

दोगयजाणु कोरू पुष्प विमानारि सम गोदावरि तडे पवले।

# सीता अपहरण



रावोणु अणि मारीचु विमानारि सुखुन गोदावरि तडे देवले।

रन्ना निपुन रबून रामाश्रमा इत्ति चंकता मोणु चोयनि।

सीता नदीतीराक पक्षिम्रग लगी उल्लोनु खेलनु दावनु बोंता।

रामु ते चोवनु सन्तोषान बेसला।

लक्ष्मोणु धनुस दोर रक्षण चोयता।

रावणान संगीने।

मारीचा योचि चा समोयु

तू माया रूप धारण कोरका। सुवर्णचितला रूप।

सीता दिकून दावनु एत्तेलि। तूं दाँका। तुक्क दोरु सीता रामा लगी संकतलि।

तु रामा गेवनु दूर दूर वोचुका। तसी माया जालान राम लक्ष्मोणुय तुचे मगलाल दंतेले। तवलि आंव सीता उबारनू उबून वचेन।

तवलि राम लक्ष्मणाक केलतेने संसार दुःख कस्सी मोणु।

मारीचान रावणान संगीन्ने अयकून तस्सि केल्ले।

रामु कांचना हिरणा दोरु मगलान दावलो।

दावनु दावनु दूर गेल्लो।

रामान बाणु सोल्लो। बाणु लग्चा हिरणान ओडि बोबाटि गल्लि।

"हे सीता ! हे लक्ष्मणा !"

बोबाटि अयकून सीता परिभ्रम एयलो।

"लक्ष्मणा मचे बंडा। आंव इत्ते कोरचे। रामा घातोकु पोल्लो। तंगेलि रण्णि आयकानावें ? तू दावनु वोचून रक्षण करी।"

ना ओने ! रामा काय जायनेय। नयि पपिया। तस्सि नेय दाँव लक्ष्मणा ! दाँव अण्णा रक्षण केरि।

सीता रण्णे अयकून लक्ष्मोणु बायर सोल्लो।

ओने तु बायर एवनिय आश्रामांतु बेस।

आंव अत्ते पंता।

उत्तलें संगुन लक्ष्मणान आश्रम चारिय तंतु एकु बोर गल्लो। अणि देवलो।

ये चोवनु बेसलो रावोणु एक संन्दा वेषान बीख निंगून एयलो।

सीता अस्सिन्ने गेवनु भिक्षा गालू बायर एयली।

तवलि रावणान तस्सी सीता उबारनु विमानारि बेसेयलि अणि विमान सोल्ले।

जडायु उबून उँचारि एयलो अणि रावणा दोरु रबेयलो। अणि संगीले

हे रावणा ये तुक भूषण नंचि। तुक्का अपमान सीता रामालि बायल ! धर्म पत्नि ! तू कोण। राक्षसकुला श्रेष्ट पुरुषु !

श्रिलोग नाथु ! ये शोभा नयि।

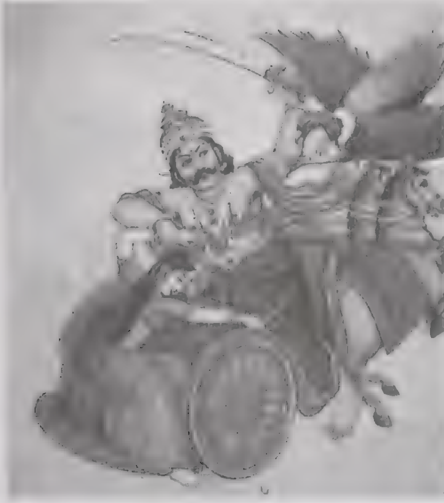
तु सीता सोडी ! आंव तिक्का रामा लगी सोडीन।

जठायूनेउत्तर रावणान अयकिल्ना।

हे जडायु तु मोरु जावनुवे पवला? तू रावण मुकारि एवनु कष्ट कडसी।

ना रावणा ना। तू सीता रामा सोणु दी। ते त चाँग ना दल्लरी मेचे लगी युद्ध करि !

दोगय एत्त पेतातु ओड युद्ध चंकीने।



जठायुने रावणा दोरनु विमानारि सुखून बायर वोडीलो।

रावणान तंगेने "चन्द्रहास" मल्लेने खण्डे काणु कत्तरलो।

जठायुनि पक कुटि जावनु तो कल्ला पोल्लो।

ते दिकून सीतादेवी ओड दुःखान रल्ली।

हे रामा ! ये रावण दोरु रबोवून मेगेलि रक्षण कोरू कोणु नावे ? देव देवा !

हे गोदावरि ! माते !

हे मलयाश्रेष्ठा।

मेगेल रामान एशिणान एयलारे ये कष्ट दुःख कोलोंगा।

सीताने दोनि काणु कल्ला गल्ली।

# अशोकवनी



रावोणु सीता गेवनु लंगे पवलो। तंगा कोट्टारा लागी अस्सिल्लो। अशोकवनि रबेयलि।

सीता कावल एतो बयालांक रबेयनि।

अणि संगीने "ये सीते तू मक्का बमणावरि दीक। आंव तुक्का सक सुख सोकर्य दित्ता। तुक्का कोसोलो उण्णावु एना।"

सीता देवी अशोकवनांतु रोणु बसेलि। "हे रामा! हे लक्ष्मणा! सोदरा! तुम्मि क्षमिजाँका। मेगेने अविवेक। तुम्मि संगीने आवे अयकिलना। ते हिरणे मगलाने मेगेले रामा बेलेयलो। तज मेगेलन लक्ष्मणाकेय। सक मेगेलो मोहु मात्र। देवा अनि इत्त कोरचे। रामुय न लगी। बंन्डूय न। ये राक्षसी लगी। एकलीच इत्त कोरचे? देवा तुवें रक्कूका।" एस्सी सीता रामाकेय लक्ष्मणाकेय अटोन विचारान अशोकवनी बेस्सलि।

# सीता सोन्दून

रामुय लक्ष्मोणुय मारीचा वेचुकोरणु एयले। आश्रम दिकूनु मन्ना आदि एयलि।

"लक्ष्मणा सीता दिकूना! पपिया इजन्नेतिक्का? आंव अणि इत्ते कोरचे? मक्का अणि कसेली गती?



अयोध्ये वोचून अम्मा लगी कसन संग्चे?"

रामा अण्णा! आंवे कसने संग्चे? मारिचान केल्लेने मायाजाल! तो

हिरणी वेषु दोरनु एवनु सीता मुकारि एंचा तू नेयवे सीता बेगे जावनु हिरणी मगलान दौलोलो। तुगेले बाणु लगचा ताणे ओडान बोबाटि गल्ली। सोब्दू अयकून रामाने रण्णे मोणु अंटोन् मक्का दंडायलो तुचे मगलान? आंव इत्ति कोरचे?

ते वेलेरि कोण्की एवनु सीता गेनु गल्ले अस्तले।

"लक्ष्मणा अनि इत्ति कोरचे?"

"चोवया अण्णा। अंका सीता कंतय गेल्लि कोणे वेल्ली मोणु चोवया।

अण्णा तू घठीन बेस।"

"लक्ष्मणा सीता केत्तेय गेल्लि मोणु सोतुका। ते अंगेलो धर्मु।"

"जायत अण्णा वच्चा।"

रामुय लक्ष्मुणाय कोरनु सीता सोन्दून चंकीले। एदे दूर वोच्चाक ओल्ले एक गरुडा दिक्कीलो। ताणे निंगीने। "ये कुमारन्तो! तुम्मी कोण? कंचे? कंतय वत्ताय?"

"अम्मि रामु अणि लक्ष्मुण। मेगेलि बायल सीता। तिक्का दिक्कून तिक्का सोदून बोंतायी। आंव रामु, यो लक्ष्मूण। तू कोण? तुक्का इज्जल्ले?"

"आंव वयनतेया। नाँव जडायु। मक्का एक अण्णा सम्पाती। अम्मि दोगाय कोरनु उबून उबून उँचारि उँचारि ओचून सूर्यमण्डाला पवनि।

सूर्य तापान पाक लसून कल्ला पल्ले। आंव अंगा अण्णकेय मोणु केलना। ये चोययि।"

उत्तले संगून जडायुन दोनि कंकण दक्केयनि।

ते दिगचाक रामान संगीने। "हे जाडायु ! ये मेगेले सीतानि। तुक्का कस्सी मेल्लि ?"

"रामा ! एक बयलेकेय गेवून एकु राक्षसु बीमानारि वत्तालो दिखीने। ती हे रामा ! हे रामा ! मोणु ओडान रडतालि। तीणे कल्ला गल्लेंनी त यी कंकण। आंव तक्का दोरनु रबोंचा चोयलो। ताणे खंडान मक्का कतरलो ? तें त अस्सि पल्लो।"

ये अयकून रामान संगीने।

"लक्ष्मणा ! सीताकचि त ताणे वेलिया।"

"हे पक्षी श्रेष्ठा ! जडायु तो कंचे दिकारकी गेल्लोलो ?"

"तो तेक्का दिखारि त गेल्लोलो।"

"वचाय पपियांदो दावनु वचाय। वोचून ते सीता रक्षण करायि। तुंचकेलो बपूस दशरथराय मेगेलो ओड्डु दोस्तु अस्सिलो। मक्का त्राणि ना। मेगेलो अण्ण संपाति केय मोणु केलना। आंव जीव सोडता।"

उत्तले संगून जडायुन प्राणु सोल्लो।
ये दिकुन रामानेय लक्ष्मणानेय कोरनु जडायुलो देहसंस्कार केल्लो। तें जावूनु दोगय कोरणु तेक्का दिखारि चंकीले।

# कबन्धु अणि शबरी



दोगंय चोंकून चोंकून मुकारि गेल्ले। तेवेलरि दिक्कीलो एक कबन्धाक। गांवन्टो ना। देह अणि मत्ते मात्र। दीग हाथ।

तो दावनु मुकारि एयलो। अणि रामा दोरलो। लक्ष्मण एयलो कोपु।

ताणे खन्डे काणु तजे हाथ कतरले। तो रामाले पयांकडे पोल्लो।

"रामा! देवा! आंव किन्नर वर्गान्तुलो। मुनि शापान राक्षसा भाव एयलो। रामा तू मक्का मुक्ति दिल्लि। तूंची देवु, तूंची सत्य, तूंची धर्मु देवा तुंचे लगी विड मगता। रामा रावाणु तेक्का दिक्का सीता गेन गेल्लो। सम चंकाय। सीता देवी मेलतलि। तचे फूडे ऋषि मुगचलारि सुग्रीवा मेल्तोलो। तो किष्किन्दारायु। तो तुक्का सहायु करतोलो।"

उत्तले संगून तो आकाशमार्गण गेल्लो।

रामुय लक्ष्मोणुय चेंकीले। चोंकून चोंकून एक आश्रमां पवनी। तंगा एक मत्तारि बयल। रामा दिकून ती दावनु एयली।

“रामा देवा ! जल्पान कोरनु, आराम कोरनु वच्चात।”



रामुय लक्ष्मोणुय तिजेगेन उत्तर अयकून तंगा बसेले। तीणे ओड प्रीतीन फलमूलय, जलपानय करेंयने। तिजे नाव शबरी। रामा खतीर तिक्का मोक्ष मेल्लो।

# सुग्रीव सख्य

रामुय लक्ष्मोणुय कोरनु सीता सोद्धून वचेवटे ऋषि मूकाजलारी पवनि।

भुप्रकृति बहु सुन्दराचि। बोरनु पुष्पफल अस्सिले रूक रुकावलि। वोले वोले पर्वत। चा चा उदका तेलेयो। संकडांतु बहुविध रंगाचे पदमाक्ष। सन सनी नदियो। तंग त कबन्धान संगील्लो सुग्रीव अणि परिवार रबतायि। तो अण्णा भीवनु एवनु रबता।

मोलाउंचारी रबिल्लो वानरान रामुय लक्ष्मोणुय अस्त्रशस्त्र दोरनु एत्ताय दिकीने। तो भीवनु दावनु एयलो। अनि सुग्रीवालगी संगीने।



“हे रया कोण मोणु कलना। दोगजाण धनसु अणि बाणु दोरणु एत्तायी। इत्ते कोरचे ?”

सुग्रीव जडक जावनु उटायलो अणि संगीने। हे हनुमन्ता ! तू वच अणि कोण मोणु चोयि। शत्रु की मित्रु मोण पोलोनु यो।

हनुमन्तु ओडु बुधुवन्तु। वायुपुत्रु। मायाजालकारी। तो एक ब्रह्मण वेषु दोरनु रामा मुकारि एयलो अणि नींगीने।

“हे कुमारान्तो ! चोयलारि एकमटे दिसुचे तुम्मि कोण ?

दोगांकय राजकल असे। संगाय कोण मोणु।

रामुय लक्ष्मोणुय काय संगुनत्तीने उलोनत्तीने रबीले।

हनुमन्ता मन्नाजले कसनकी संगडांतु त दोगंय।

हनुमन्त मुकारि एयलो अनि संगीने।

“हे देवान्तो ! आंव हनुमन्तु। वायुपुत्रु सुग्रीव रायालो सुहृत। सुग्रीव अण्णाले भय्यान एवनु रबीला। कोट्टरा वचा जायनेय। तो तुमचेकेलो सहाय अपेयता। तगेलो अण्णा बाली। तुम्मि दुःख निवारण कोरका।”

उत्तले संगून हनुमान्तान स्वरूप धारण केल्ले। ये दिकूनुय अयकूनुय रामाक कबन्धान संगील्लो उडगास एयलो।

बुदवन्तु जावनु अस्सिल्ले हनुमन्ताने वर्तमान अयकून रामाकेय लक्ष्मणाकेय ओडु सन्तोषु एयलो। लक्ष्मणान संगीने।

"हे हनुमन्तराया यो मेगेलो अण्णा रामु आव लक्ष्मोणु। अम्मि दशरथरायाले पुत्र।

अण्णालि बायल सीताक रावणान दोरनु वेल्लि। तिक्का सोन्दून बोंत्तायि। रावणा लगी सुकुन सीतारक्षण कोरका।

कबन्धान संगून सुग्रीवा पसुन अयकीन्ने अस्स। तुंचि निंति सहाय मेलका।"

"जाओ। जायत अस्सिन्ने अम्मि कोरू। अंका सुग्रीवरया दिकुया। एय्यायि वचा!" हनुमन्तान संगीने।

तेगंय कोरनु सुग्रीवरया मुकारि पवले। हनुमन्तान संगीने "हे सुग्रीवरया ये रामुय लक्ष्मोणुय दशरथरयाले पुत्र। इक्षांगु वंश अभिमानु। अन्नि तुंचगेलो सौहार्द मंगतायि।

ये अयकून सुग्रीव मुकारि एयलो। सौहार्दा उत्तर दिल्ले। रामु मुकारि एवनु सुग्रीवा आलिंगण केल्ले। दोगंय बेसून उल्लेयले।

"जायत सुग्रीवरया अम्मि जायत जल्लेने करतायि। आंव तुगेले अण्णा दिकूक लक्ष्मणा बेलेयता। सीतारक्षणेक तुगेलो सहाय जाँका।"

"जायत श्रीराम देवा। अम्मि जाँका जल्लेले कोरू।"

तस्सी श्रीरामानेय सुग्रीवानय परस्पर सख्य केल्ले।

# सुग्रीवाने परीक्षण



सुग्रीवान संगीने "हे श्रीरामा देवा मेगेलो अण्णा बाली बहा बलवन्तु, निर्बन्दबुद्धि कोणे संगुचे अयकना।

मगिरी एक विशेष शक्ति तक्का अस्स। कसलि मलारि कोण तजे मुकारि एवनु तक्का बलपरीषण उदीता तजेकेलि अर्धि शक्ति तक्का मेलता। तवलि बाली चोडु बलवन्तु जत्ता। ते दिकून रामा मक्का जायनेय। ताणे मक्का कोट्टारा सुगुन बायर गल्लो।

मक्का बायल चेरडुवान्क चोंचासरी वचा जयनेय। देवा तूंचि रकुका।"

"जायत सुग्रीवा जायत! तुगेले अण्णा बाली चांग संगून मन्ना करता। संगीने अयकिल्ला दलारि आंव बल, वोडपण, इत्ते कसी? धर्मु इत्ते मोणु तक्का दकोन दित्ता।"

"श्रीरामदेवा एक कयरि तुक्का तक्का बलपरीषण जयजंचा अस्सिल्लि शक्ति असवे मोणु चोंका।"

"कसी सुग्रीवा तुक्का कोलोंका?"

“श्रीरामदेवा चोय! ते भीमाकार अस्तिकूड। ते दुंधुबि मलेले राक्षसाने। ते उभारनु दूर विंदुता।”

“जायत सुग्रीवा ! तू चोयि।”

रामाने ते अस्तिपंचर एक पयाउंटान उभार विन्दीने।

“जय श्रीराम ! जय श्रीराम !”

हनुमन्तान उठान जयकार केल्लो।

ते जांव सुग्रीवान संगीने। “हे श्रिरामदेवा एक परीषण लगेन।”

“कसी सुग्रीवा ?”

“चोय श्रीरामदेवा! तंगा दिकुंचे ते सात पोने! ते एक्क अस्त्रान कतोरका।”

जायत सुग्रीवा चंकाय दक्केय ते रूक। सुग्रीवा मगलान राम चंकीलो। सात पोना रूक एकेक लगलगून रबिलायि। श्रीरामान धनुस काणु एक बाणु सोल्लो। तो सम वोचून ते एकेक रूक एकसमयारि खतरले।

ये दिकून वानारानी घोषण केल्ली। “जय जय श्रीराम”।

ते जांवनु संक्टेय वापस एयनी। रामान संगीने। सुग्रीवा मगेलो बावु सक्ष्मोणु वोचून बाली दिक्को। लक्ष्मणालगी हनुमन्ताकेय बलेयि।

ये अयकून सुग्रीवान संगीने। “हे हनुमन्ता राया ! तू लक्ष्मणाकुमराकेय गेवनु बाली लगी वर। हनुमन्तुय लक्ष्मोणुय कोरनु बालि दिकू गल्ले।

# बाली अणि लक्ष्मोणु

लक्ष्मोणुय हनुमन्तुय कोरनु बालि कोट्टार मुकारि पवले। हनुमन्तान बाली केलेयिने।

बालीन दोगंय बीतेरी उद्धीले। बालीन संगीने "हे लक्ष्मणकुमारा तू दशरथारायोलो पूतु! आंव साक्षात ब्रह्मदेवालो! किष्किन्तापति! वानर रायु। तुजे खतीरी इत्ते कोरचे? सांग जंचे करता। तो राजधर्मु। निंवगी।"



"हे किष्किन्ताराया! तुक्का अयोध्यपति श्रीरामचन्द्रा नवारी नमस्कार संगून एक कयरि कोलोंचा एयलेलो। इत्ति मोलारि तुगेल बावन्दु

सुग्रीव तुगेल बय्यान ते मोलारि रन्नांतू रबता। तक्का तू वापस उद्धून कुटा रबोंका ते अंचकेले रामालि विनंति।"

"जायत लक्ष्मण! जायत तो वोडु दिक्कारी! पायकीलो। ताणे मक्का पट्टेयलो। ते खतीरी एसी सक जल्ले।"

बालीने उत्तर अयकून लक्ष्मणान निंगीने।

"हे बाली परिहार इत्ते? तूंचि सांग" ताणे केल्लोलो अपरातु क्षमि जावनु तक्का कोट्टारावुदून रबेय।"

"जायने लक्ष्मणा! जायने! इत्ति मल्लारि! किष्किन्तेक अनि रायु एक पुरो। बाली नादलारि सुग्रीवु। कोणे एकलो।"

"ते कसी?" तुम्मि बावन्ड नयवे? लक्ष्मणान निंगीने।

"लक्ष्मणा! आंवयि दुंदुबी मोल्लोलो राक्षसूय जावनु घोर युद्ध जन्ने। तो दावनु एक गुहेंतु चोल्लो। आंव तजे मगलान गल्लो। बायरे कावल सुग्रीवा रबेयलो। मर्गिरि मक्का दुंदुबीने वेचु केल्लो मोणु संगून गुहे पत्तरान मन्दुन सुग्रीवु दावनु कोट्टारा गेल्लो। तस्सी ताण मक्का पट्टेयलो। आंव ओड कष्टकाणु बायरे एवनु चोंचाक सुग्रीव आणु मेल्लो मोणु घोषण कोरनु रायु जावनु बेस्साला। ते कोप्पान आंवे तक्का मारनु दंण्डायलो। अनि वापस एमका दलारि ताणे मेजेलगी मुष्टियुद्ध कोरका। दलामात्र कायरि मुकारि वतनी। वेगेली वाट ना।"

ये अयकून लक्ष्मणान संगीने "हे बाली ! मेगेलो अण्णा रामान उत्तर दिल्लेने अस्स।"

"कसेने लक्ष्मणा ?" बालीन निंगीने।

"इत्ति मल्लारि ! सुग्रीवाक किष्किन्तेंतु रबेयन मोणु। ते बेगे तू बंवन्डा लगी कसलाक मरनेक वोत्ता ?"

"जायनेय लक्ष्मणा अनियीचि वाट।"

"जायत बाली चोवया"

उत्तले संगून लक्ष्मोणु वापस चंकीलो।

# बाली अणि सुग्रीव



लक्ष्मोणु वापस एवनु बालीन संगीन्ने कयरि। रामा अनि सुग्रीवा लगी संगीने। कयरि मन्ना कोरनु रामान निंगीने "इत्ति संगता सुग्रीवा?" "जायत रामा! वेगेली वाट नावे? तू रक्षण कोरका श्रीराम देवा! आंव मल्लायुद्धा वत्ता" सूग्रीवान संगीने।

ये अयकून रामान संगीने "सुग्रीवा तू वोच बाली लगी उल्लेय। तो इत्ति करता मोणु चोनु दिसता तस्सी केरी। आंव बायर रबून चोयन।"

दूसरे दिस्सा सुग्रीव बाली लगी गेल्लो। "अण्णा आंव इत्ति कोरचे? रामाक सहाय कोरका तुजेलगी युद्धय कोरका। सांग। तू संग्चे तस्सी कोरू।"

सुग्रीवान संगीन्ने अयकून बालीन संगीने "हे सुग्रीवा! तू यो अंका मल्लयुद्ध कोरू। कोणे एकोलो किष्किन्तेरायु।"

दोंगानिय एत्तपेत्तांतु मल्लयुद्ध केल्ले। युद्धांतु बालीले पेट्ट गेवनु रोणु सुग्रीवु दावनु रामा लगी एयलो।

“हे रामा ! तू इत्ति केल्ले ? आंवे तगेले पेट्ट गेवनु पिपरि बायरे एयली मगेली ! मक्का जायिनेय ! आंव मोरतोनो !”

“अरे सुग्रीवा मल्लयुद्धांतु तुवंय तोवय दिक्कु एकेलेकान। आंवे इत्ति कोरचे। अस्त्र सोलारि तुक्का लगतेने।”

“अनि इत्ति कोरचे” सुग्रीवान निंगीने।

रामान संगीने “एक उपाय अस्स। फल्ले वेचे वेलेरि आंव एक माल गलता। ती माला गालनु तू मल्लयुद्ध केरी। आंव चोयता।”

दूसरे दिस्सा बालीय सुग्रीवाय जावनु घोरयुद्ध चंकीने। ते युद्धांतु रामान निपुन रबुन बाणु सोल्लो। बाणु लगुन बाली पोल्लो।

# बाली अणि रामु

बाणु लगुन पल्लेले बालि दिक्कुक रामु एयलो। रामु एत्ता दिक्कुन तारेन संगीने "हे राया श्रीराम एत्ता इत्ति संग्चे ?"

"तारे रामु एवो। मक्का रामा लगी। दोनी उत्तर निंगू अस्स।" रामु बाली लगी पवलो। संगीने "हे बाली तुक्का मेलकाजल्लेने मेल्ले। आंव निसहाय। इत्ति मल्लारि सुग्रीवान मक्का सीता सोन्दूक सहाय करीन मोणु संगीने।"

ये अयकून बालीन रामा लगी निंगीने। "हे श्रीरामदेवा ! तुक्का येंचि कयरि आंव कोरनु दीत्तोनो अस्सिन्नमू। तुगेले सीता वेलेलो रावाणाक ये बल्लामन्तून आंवे सप्ता सागरांतु बुंडेयलो अस्स। अत्तय तो चांगनेय। ओल्लो अहंकारी ! अनि तूंचि सिक्केय। एक कयरि मेगेले अंगताक सुग्रीवा कुट्टांतु युवरायु कोरका। मेगेले तारेक जाँका जल्लेने आदर दींका। तेंत आंव तुज लगी मगता।"



"जायत बाली! तुगेलो आग्रहु तस्सी चोंको। तोगडे कयरि देवा अत्तांतु! अम्मि एक आग्रह करतायी। वेगेले चंकता। तुजे खतीरीय तस्सीच। आंवे इत्ति संग्चे?"

रामाने संगीन्ने अयकून बालीन मल्ले। "हे श्रीरामदेवा! तूंचि धर्मु, तूंचि सत्य, तूंचि नीति, तू केल्लेने धर्माबेगेक। तुगेले कर्याक तुजे कुट्टांतु मेगेलो अंगोतु अस्तोलो। आंव मोक्षु मगता अनि देह सोडता।"

उत्तले संगून बालीन देहत्यागु केल्लो।

सुग्रीवाक यथाविधि राज्याभिषेकु कोरनु किष्किन्ताराय केल्लो।

बाली पुत्त अंगताक युवरायु केल्लो। हनुमन्तु सुग्रीवालु मुख्य उपदेष्टुय मन्त्रीयु जल्लो।



रामान सांगीनो "सुग्रीवाराया! अत्त पौसकालु। अनियेंचे वसन्तकालाक अंक्का सीता सोन्दून वोचु।"

उत्तले संगून रामु लक्ष्मोणुय पर्वतारी गल्ले।

# सीता सोन्दून वानर गण

पौसकालु वोचुन वसन्तकालु एयलो। सुग्रीवालगी सुकून विवोर काय केलना। रामान लक्ष्मणालगी संगीने। “अरे लक्ष्मणा सुग्रीव अंक्का विसरलो मोणु दिस्सता। तू वोचुन चोवनु यो।” लक्ष्मोणु सम किष्किन्ते कोट्टरा मुकारि पवलो। लक्ष्मोणु एयलोलो विवोर शिप्पायानि सुग्रीवाक केलेयिने।

सुग्रीवुय हनुमन्तुय परिवार समेत एवनु लक्ष्मणाक आदरान कोट्टारांतु अप्पेयलो। अनि क्षमापण निंगून संगीने “लक्ष्मणकुमारा! अम्मि क्षमा अप्पेयतायि। अम्मि नेणतेना रामकयराक तोडोवु एयलो।”



सुग्रीवालो स्नेहूय विनोयूय दिक्कुन लक्ष्मणान संगीने "वोच्चा सुग्रीवा! अनिपणीय सीता सोन्दू जावनु जाँका जल्लेने करी।"

सुग्रीवाने सेनेक चारि कोरनु चारीय दिक्कारी बलेयिनि।

विनीताले नेतृत्वारि पूर्व दिक्कारि गेल्ले। शतबाली अनि संघ उत्तर दिक्कारि गेन्नि। सुशेषणा अनि संघ पश्चिम दिक्कारि गेन्नि। अंगतु अणि हनुमन्तु दक्षिण दिक्कारि गन्नि।

हनुमन्तु वच्चे फूडे श्रीरामा दिक्कु एयलो। "श्रीराम देवा मक्का तुजे केलो अनुग्रोहु जाँका। सीतादेवीक दिक्किलारि इत्ति संचे?"

हनुमन्तालो स्नेहूय विनोयूय दिक्कुन रामाक भारी सन्तोषु एयलो।

रामान संगीने "हनुमन्ता तू समर्तुय बुद्धिवन्तुयत। मेगेले सीतादेवी दिक्कुन यी मुद्धि दी।"

एस्सि संगून श्रीरामाने अत्ता पल्लेलि मुद्धि काणु हनुमन्ता दिल्लि।

रामान एक अनुभवूय संगीने। हनुमन्तु रामा पायपोण गेल्लो।

# वानर अणि संपाति

हनुमन्तु अणि अंगतु कोरनु वानरांकेय गेवनु तेक्का मोलोयु गावुय संगड सीता सोन्दून गेन्नि।

रन्नांतु, रूकु रुकावलि, नदीयो, तेलियो, गुहेन्तु सक सीते सोन्दून बोवुनि।

न! केयना! सीता दिकूना! देवा! अनि इत्ति कोरचे? वापस वोचुन कसेने कोरचाक? रामालगी इत्ति संकचे। सुग्रीवालगी केस्सि वचे? वानरांक निराशा!



ये सक दिक्कुन हनुमन्तान संगीने "हे अंगता सीतादेवी दिक्कुनत्तिने आंव वापस एयना। तू इत्ति संगता?

ये अयकून अंगतान संगीने "अरे हनुमन्ता तू संगीनंत कयरि। मक्का अतय विस्वासु अस्स चोवया। ये भारतदेशंतु तेक्कारि कंतयपेरा वच्चातु मोणु चोवया।"

सकडेय मुकारि चंकीले।

किष्किन्तेंतु सुग्रीवालगी तिनि दिक्कारि गेलेले वानर गण वापस एयनि। तन्नि सीता पेलेयिलिन मोणु सुग्रीवाराया लगी संगीने। ये अयकून सुग्रीवान संगीने। ना भींका नक्का। हनुमन्तु अणि अंगोतु एवोयि तुम्मि आराम करायि। मगीरि चोवु।



हनुमन्तुय अंगताय चोंक्कून चोंक्कून तेक्कारि सागरतीरा पवनि।

अणि कंतयि? कस्सि?

हनुमन्तान संगीने "अंगता आंव वापस ना। उपवास कोरनु एस्सि पोडुवत्ता। तू?"

हनुमन्ता आंवय अन्न नक्कामोणु दोवोरुनु पोडुवत्ता। मक्काय अनि जीवित नक्का। वानर सकड समुद्रतीरा पल्लि।

दीस गेल्ले। सक अवश जल्लि। ते वेलरि एकु पक्षीश्रेष्ठु कुंठून कुंठून एत्ता वानरगणानि दिक्कीने। ये दिक्कूनु जांबुवान उठावनु तजे लगी गेल्लो अणि निंगीने। "हे पक्षीराया तू कोण? अम्मि रामसेनांतुनि। सीता सोन्दून एयनेनि! अनि इत्ते कोरचे? काय केलना।"

ये अयकून ताणे संगीने "आंव संपाति। मेगेलो बवन्डु जडायु। दोगेंय कोरनु उबून उबून सूर्यमण्डलां पवनि। उज्जान पक्क लस्सून कल्ला पल्लि। तो केय मोणु मक्का केलना। आंव उप्पासि। आंवय सबार काल ना। रबायि एक चोयता।"

उत्तले संगून संपाति तेक्का दिक्कारि समुद्रांतु चोयलो। अनि संगीने "चोयाय मक्का लंगेंतु रोणु बस्सेल्ले एक बयलेक दिकु एत्ता। ती सीतादेवी जावयात। तुंचे कुट्टांतु कोणाक उडुकि मारनु लंगें पावयांत। तक्का सक मन्नांकोरनु एवयात। लंगापति रावोणु। तो महा बलवन्तु, पराक्रमि। जाँका जल्लेने करायि।"

उत्तले संगून संपाति शान्तजल्लो।

गरुडवर्गांक एक सिद्धि अस्स। इत्ति मल्लारि दूर अस्सिन्ने तंका दिक्कु एत्तेने।

संपातीन संगीन्ने अयकून अंगतान निंगीने "हे वानरांतो अनि इत्ते कोरचे। मक्का उडुक्कि मारनु लंगे वच्चात। वापस जायनेय। तेवली इत्ति कोरचे?"

ये अयकून जांबुवान मुकारि एयलो अनि संगीने "ये कुट्टांतु एकलाक ते सामार्तय अस्स।"

"ते कोण?" अंगतान निंगीने "तो अंगेलो हनुमन्तु! तक्का जत्तेन"

"तो केय" अंगतान निंगीने। चोंचाक हनुमन्तु दूर वोचनु शान्तजावनु बसेला। जांबुवान चोंक्कून हनुमन्तालगी गेल्लो।

"हे हनुमन्तराया!

तुजे हत्तांतु त कयरि।"

"कस्सने कयरि? आंवे इत्ति कोरचे?"

जांबुवान संगीने "अरे हनुमन्ता! तू वायुपुत्रु, महादेवालो अनुग्रोहु मेल्लेलो, तुक्का लंगे वोचुन सीता दिक्कुन वापस एवियात।"

ये अयकून वानरगणानि हनुमन्तालगी एवनु जयकार केल्लो।

"जय जय हनुमन्तराया! जय जय श्रीराम"

ये अयकून हनुमन्ता ओडु सन्तोषु एयलो। हनुमन्तु उठायलो अनि संगीने "जायत चोवया! श्रीरामाने कयरि! तोचि रक्को!

उत्तले संगून हनुमन्तु मलयपर्वतारि चेल्लो। तंग सुकून अप्पा अम्मा

गुरु भूदेवी सकडांक वन्दन कोरनु एकि खुति लंगे दिक्कारि मरलि।

ते वेलेरि भूभाग सोगोलोच हल्लोलो। समुद्रजल ऊँचारी ऊँचारि एयले।

हनुमन्तु आकाश मार्गेण लंगे दिक्कारि उब्बोलो।

वोचे वट्टेरि सुरस मोलेलि एकि राक्षस एयलि। ती हनुमन्ता गीलु एयलि। ते दिक्कुन हनुमन्तान देह सोल्प ओड केल्ले। ये दिक्कुन तीणे तोंड एकलगेन ओडकेल्ले। ये दिक्कुन हनुमन्तान देह सान केल्ले। अनि तिगेले तोंण्णांतु चोणु कन्नांतुलान बायरे एयलो।

हनुमन्तु उब्बुन मुकारि गेल्लो।



ते वेलेरि मैनागम मोल्लोलो पर्वोतु समुद्रा भीत्तेरी सुकुन उँचारि एयलो। अनि संगीने "हे हनुमन्तराया ! तू श्रीरामदूतु ! संशुद्धु ! तू उण्णे खडि अंक बेस अनि आराम करी। तें जावनु वेच।"

"ना मैनागा। जायनेय सोमूय ना आंव वोत्ता ! रामा कयरे तोडोवु अड्डु पाणा।"

उत्तले संगून हनुमन्तान एकु पाय पर्वतारि लगोवनु उब्बून गेल्लो।



तें जावनु वचे वट्टेरि चायग्रहि मल्लेलि एक राक्षसीन हनुमन्ताक सवलेक दोरनु रबेयलो। ये दिक्कुन हनुमन्ताक कोप एयलो। हनुमन्तान गेदा काणु मरलो। पेट्टु पोडुचाक बोबाट्टि गान ती काल पोल्लि। हनुमन्तु दुसेरी मुकारि गेल्लो।

तेवेलि दिक्कीलि एक प्रकाशवर्षु। लगी पंचाक लंग मोणु मोन्ना जल्लि। रत्ति सुवर्ण शोबेन्तु पला पला तला तला दिसता लंगे चोंचाक।



भंगी दिस्सुचे बंगरा घरं ओल्ले ओल्लो कोट्टारा। दीवे जोलोंनु भंगी केल्या। सुबग सुवर्ण सुन्दर नगरी लंगे। हनुमन्ता दिस्सेने।

श्रीराम देवालि सीता अंगकेय अस्तेलि। तें त लंगापुरीक उत्तले परिशोभा दिसेता। देवा रामा तुगेल दयेन आंव उत्तले दूर पवनो। अनि तूंचे सीता दक्कोंका। रामा ! रामा !

हनुमन्तान मन्नांतु मल्ले। बावनु चोवया। तेवेलेरि कोट्टरा मुकारि एकी बायल रबीलिया। हनुमन्ता दिक्कून ती अट्टहासु कोरनु दोरू एयली अनि निंगीने। "तू कोण ? कसेलाक एयलेलो ? गाँव सोडी। ना दालारी आंव तुक्का मरतेनी। आंव लंगालक्ष्मि। मेगेलो धर्मु त लंगे रक्षण।"

ये अयकून हनुमन्ताक कोपु एयलो। गेदेन मारनु तिक्का हनुमन्तान दंण्डायलि। पेट्टु पोडुचाक ती गरडें पल्लि। हनुमन्तु मुकारि चोंकीलो।



लंगे बोवनु चोयलो। तवेलेरी रावणाले कोट्टारां पवलो। तंगा रावोणु, मण्डोधरी निद्धें पल्लियांयि।

हनुमन्तु सन्त तंग सुकुन उठ्ठावनु चोंकीलो। तवेलेरि एदी बयलो एक्केड बसीनायि। हनुमन्तु दूर एक रुक्कारि बेसुन चोयलो। मोद्धे एक बयले। दिक्किलारि सीता मोणु दिस्सेता। ती इत्तिकी मण्डा।

चोवया कोण इत्ते मोणु।

# रामालि मुद्धि अणि सीता!

राति जल्लि। संगटय निदेंचा आराबिने।

सीता देवी राम नाम मोणु बेसेलिया।

हनुमन्तु सन्त रुकार सुकून खाल देवनु एयलो।

सीता मुकारि वोचून पायपोल्लो।

"नमस्कारु सीता माते!

आव श्रीरामदूत! सीता देवी पोलोंचा एयलेनो।"

"पपिया! तू कसी ये खोर रन्ना एयलो? आव हतभाग्या।



देव देवा ! कसने पाप केल्ले आवे? मक्का कलनारे हनुमन्तराया। आवे इत्ति कोरचे? बमुणुय ना बंन्डेय ना लगी।"

"न माते! तू महा भाग्यवन्ति। तुगेलो राम, देवुच्चि! महा पराक्रमि आव द्रेष्टान्त दिकून मन्ना केल्लेने अस्स।

चोय यी मुद्धि! तुगेले रामान दिल्लेलि!

देवी दकोंचाक। चोवनु पोलोंचाक।"

मुद्धि दिकून सीता देवीक ओडु सन्तोषु जल्लो।

"श्रीरामा देवा! तू मक्का रकीली। हनुमन्तराया ! तू महादेवा अवतारुचि।

तुक्का देवु चांग कोरो। सतर्कीति मेलो। तू संशुद्धु! देव रको।"

तवेलि रावोणु घोषण कोरनु परिवार समेद पवलो। रावोणु एत्त दिकून हनुमन्त उटकि मारनु निपीलो।

रावोणु सर्वांग वेषविदान कोरनु एयला।

रावोणु चोंकून एत्ता हनुमन्तान दिक्कीने।

यो वे रावोणु? महा तेजस्वी! आकारु रूप दिक्किलारि पराक्रमि? कसी आणे ओसोलो विवरदोषु दक्केयलो? दिस्ता! बुद्धि वायड जल्लिलि अस्तेलि। चोवया तो सीता देवी लगी इत्ते करता मोणु!"

रावणान सीता लगी संगीने।

"देवी सीते ! मेगेले कयरान्तु तुगेले उत्तर मेलका ! सांग !"

सीता देवी संगीने। हे राक्षस श्रेष्ठा ! तू महाबलवन्तु, बुद्धिवन्तु, इत्तारे महाराया मक्का पीडा दित्ता ? तुक्काय नावे एक बायल ?

तिक्काय नावे रूपभंगीय ? इत्ता महापाप कोरुवत्ता ?

अपडू पाणा मक्का ! मेगेलि संशुद्धि पेल्लानगालु पाण। महापाप करसी। मेगेलो बमूण श्रीरामु। श्रीपरमेस्वरालो साक्षातकारु महाविष्णुलो रूपधारी ! रामान तुक्का सोण्णा। सर्वनासू आणिये ! मेचे लगी एस्सी पपिया ! दूर वच ! घरला वच !"

सीताने वर्तमान अयकून रावणान संगीने "सीता तू आव संगीने आयक ! रामु अंगा केंयि एम्चा वचना। तुक्का वोरुकय वचना।

मेजे लगी राब ! मेजे लगी सुखान रबूयात। अत्त आव वत्ता। मगीरे एत्ता।"

उत्तलें संगून रावोणु चंकीलो।

हनुमन्तान संगीने "देवी सीता माते आंव वापस वोत्ता। ये रावणाक रामु कोण सीता कोण मोणु एक सिकोंका। आंव रावणा दिक्कून्त वोत्तोनो।"

उत्तले संगून हनुमन्तु रुकारि सुकुन रुकारि उडकि मारनु गेल्लो। मुकारि एयलेल राक्षसान गेदेन मारनु दण्डायिनि। गोन्दोलो अयकून रावोणु बायर एयलो। तेवेलेरि राक्षस दावनु एत्तायि दिक्कीने। तनि संगीने "हे लंगेशा अंचे रक्षण कोरका। एकु वानर ! तो सेकडांक

मारनु दंण्डायता। अम्मि इत्ति कोरचे ?

ये अयकून रावाणान पुत्ता लगी संगीने "हे इन्द्रजित्ता ! मेगेले मेघानाथा तु वोच ते मंगडा दोरनु आडि। तो कोण इत्या एयलोलो मोणु निमेंगी।।"

अप्पान संगीन्ने अयकून मेघनाथ दौलो। हनुमन्तूय जावनु ओड्डु जगडे जल्ले। मेघनाथान अस्त्र सोल्ले। हनुमन्तान रूक रूक्कावेलि उम्माटुन सोणु विन्दीली।

ये दिक्कुन मेघनाथान नागास्त्र सोल्ले। नागास्त्र वोचुन हनुमन्तान मन्दीलो। मेघनाथानेय राक्षसानीय कोरनु हनुमन्ता दोरनु रावणा मुकारि वेल्लो।



हनुमन्तालो मोहूय तोचि अस्सिल्लो। तेदिकुन हनुमन्तु शान्त जावनु रबीलो।

रावणा मुकारि एंचा रावणान निंगीने "अरे मंगडा ! तू कोण ? कसलाक एयलोलो ?'

हनुमन्तान संगीने "आंव श्रीरामदूतु हनुमन्तु। तूवे श्रीराम देवालि सीतेक बलान दोर अल्लिया। कसलाक यो

अधर्मु। लंगेशा ये भूषणवे? सीता सोन्डी। अनि मानुराकि। तें त तुक्का चांग। ये कोलोंचांक त आंव एयलोलो।"

"ना वानरा! ना तू केलेने सक विगड। मेगेल राज्यांतु एवनु अंक्का अपमान केल्लो। तुक्का सबा सोडु जायनेय।"

ये अयकून रावणाले बवन्डु विभीष्णान संगीने "हे अण्णा! दशमुखा। तू लंगेशु मात्र नेयी। तू त्रिलोकनाथुय। तू केल्लेने शोभा नी। वेगेल बयले लगी बलालकार पाणा। ते अधर्मु। तू सीते सोडि। हनुमन्तु वोचो। तो एकु राजदूत। तक्का मारु पाणा। ते अंक्का भूषण नेयी। राज्यनीति नेयि। तक्का सोडि अनि मानुराकी।"

ये अयकून रावणान संगीने "विभीष्णा! अंगेले बेयणि लगी केल्लेने केलनावे? यो वानर महा बलवन्तु ताणे केल्लेलि कर्णि अम्मि दिक्किलि नेयिवे? रामु लगेन एयलारि लंगे सर्वा नाशु अटेतेंनि। लंगे चंगपणाक तू ये मंगडाकेयि सीताकेय सोंडि।"

रावणाक कोपु एयलो। "अरे विभीष्णा तू भिजूडु। मक्का मेगेले बेयणीयलोयि मानुत ओडु।"

"अण्णा इत्ते केरी। आंव संगीन्ने लंगे चंगपणाक। तू एक कर्यरि केरी।"

ये वानरा बल्लाक लुगड मन्दुन उज्जो गालि। "तें त चांग।"

रावणान मेघनाथालगी संगीने

"मेघानाथा तू ते वानरा दोरनु तजे बल्ला लुगडे मन्दुन उज्जो गालि।"



रावणान संगीने अयकून मेघनाथन हनुमन्ता बल्ला उज्जा गल्लो।

हनुमन्तान देह सान केल्ले अनि उडकि मरलि अनि लंगेंतु उबुन दावनु उज्ज गल्ले तो वापस गेल्लो। वचे वट्टेन सेनिन्द्रंतु बुड्डुन उज्जो वडोवोन वापस पवलो।

हनुमन्तु एत्त दिक्कुन वानरांक ओडु सन्तोषु जेल्लो। तन्नि जयकार कोरनु सकडेय जोर दार कोरनु उपवासु रबोनु कदलीवनं विहार केल्लो। तें जावनु किष्किन्तें पवनि।

हनुमन्तु संम रामसन्निद्धींतु गेल्लो।

हनुमन्तु एत्त दिक्कुन सकडे उठ्ठायले। अंगतान निंगीने हनुमन्ता! इजन्ने?

"दिक्कीली सीता देवीक आंवे श्रीराम देवा। धन्नोसमीः धन्नोसमीः"

श्रीरामान उठ्ठावनु हनुमन्ता आलिंगन केल्ले। "हनुमन्ता! तू रक्कीलो मक्काय सीताकेय अंगेलो मानुय। तू धर्मिष्ट, सत्यवन्तु! तुक्का चांजावो। हनुमन्तान लंगेंतु संभोवु अनि रावणान कयरि रामा केलेयने। सुग्रीवा अनि कसेन करोचे?"



सुग्रीवान संगीने "लक्ष्मणकुमारा अंका अनि युद्ध कोरनतिन्ने रावण हरवोनत्तिन्ने सीता मेलना। इत्ति कोरचे? अंका युद्धसन्नाहु कोरिया।

# सेतुबन्धन

श्रीरामुय लक्ष्मोणुय सुग्रीवुय वानर सेनेय लंगे दिकारि संचकीनि।

वेले लगी पंचाक सैन्य संगटान रबीनि। विशाल-विस्तृत जावनु पोल्लोलो समुद्र दिक्कुन आश्चर्यान चोयनि।



"देव देवा ! यो समुद्रु कस्सी तारण कोरचे? हनुमन्तु उडुकि मारनु गेल्लो। अम्मि कस्सि वतानी?"

"चोवया। इत्ते कस्सि मोणु"

लक्ष्मोणुय अंगोतुय कोरनु वेलेरि वोचुन चोयनि अनि रामालगी एवनु संगीने। "अण्णा रामा! सेनासमेत वचाक अंका एक संकोवु कोरका।"

"ते कस्सि? उतले दिगायेन उत्तले दूरा?" रामान निंगीने।

"जायत श्रीरामदेवा ! जतने !" सुग्रीवान संगीने।

"कस्सि? रामान निंगीने। ते अयकून नीलान संगीने

"पर्वातारि सुकुन फत्तर पुट्टोन आंणु लगलगी दोवोरुनु कोरियात।"

"कस्सि ? तु इत्ते संगता नीला ? सुग्रीवान निंगीने ।

पत्तरा दंन्त कोलचा लगी निंगूक तन्नि संगीने जायत। "कोरियात चोविया अंक्का ।"

सुग्रीवान तगेले सेने लगी संगीने "वोचाय चोयायि जायत जल्लाने करायि ।"



वानर वोचुन मोलो फुट्टोन पत्तर काणु समुद्रांतु विन्दीले। नीलान एक्केक कोरनु दवरले। एदे जंचाक पत्तर बुडूक आरांबीने। ये दिक्कुन सुग्रीवान निंगीने "अनि इत्ति कोरचे ?"

रामान संगीने आंव चोयता। समुद्रादिप वरुणाक रामान स्मरण कल्ले। वरुण देव पवलो। "देवा वरुणा तू इत्ति संगता ? आंवे बाणु काडका की तू सेतुबन्धन साम कोरनु दित्ता ?"

रामालो कोप्पूय संकेडेयि दिक्कुन वरुणदेवान संगीने "हे श्रीराम देवा तुगेलो संकल्प तस्सी चोंको। तुम्मि सेदुबन्धन करायि। सेतुबन्धन आरंबीने। श्रीरामानेय लक्ष्मणनेय कोरनु महादेवा प्रीति जावनु शिवलिंग प्रतिष्ठा केल्लि। ते जावनु सेतुबन्धन आरंबीने। तेवेलेरि एकि सनि चन्नि एवनु रेव गलता। ते दिक्कुनू रामु तिजिलगी निंगीने "तू इत्ति करता। तुक्का अंगा कसने कयरि?"



"देवा मक्का जायतजँचे आंवेय करता। देवकर्यान्तु आंवे अस्स।"

ते चन्निन संगीने अयकून सकडा ओडि प्रीति दिसेली। श्रीरामान तिक्का अप्पोणु अनुग्रोहु दिल्लो।

सेतुबन्धन कोरनु श्रीराम सैन्य लंगें पवले।

श्रीरामुय वानरेय कोरनु लंगें पवलोलो विवोरु रावणाक मेल्लो। राक्षासांक भय्य जल्ले। एक सने मंकड एवनु एदे काल फूडे दक्केयले पराक्रम अंक्का केलता नेयवे? एक बयले बेगेक जावनु यो रावाणु! अंगेलो लंगेशु इत्ति कोरुवत्ता? सर्वनाशुवे? जनपतानि एत्तापेत्ता उल्लोंचाक आरांबीने।

ते सीताक सोणु दीवनु लंगे रक्षणाय लंगेशालो मानुय अन्तस्सेय रक्कू पाणावे ?

अस्सि सक जनपतानि उल्लोंचो विवोर रावणा मेल्लो। रावणाक कोपु एयलो। रावणान राज्यसबेतु निंगीने। "रामु अनि वानरसेन लंगे लगी युद्धाक एयनायि। इत्ति कोरचे ? तुम्मि संगाय। ते जावनु आंव संगन।"

विभीष्णान उठ्ठावनु संगीने "अण्णा लेंगेश ! सीता सोन्डि। लंगेचोय रावणा कुलचोय। मानु राकि। तें त तुक्का भूषण।"

ये अयकून रावणाक कोपु एयलो। रावणान संगीने। "तु एकु भिजूड।

तु तुगेने कयरि चोयि। अंगेलि बेयणि शूर्पणेलगी तन्नि केल्लेने ?"

विभीष्णान संगीने "अरे अण्णा तू त्रीलोक चक्रवर्ति ! लंगेरायु ! तू बेयणिले करने राज्याक दोषु अडु पाणा। सीतानयि द्रोहु दींका। ते रावणकुला अपमानु। तिक्का सोडि अनि मानवराकि तो त अत्त धर्मु तू काय अयकना। आव वोत्ता। तू इत्ते केरी।"

उत्तले संगून विभीषोणु देवनु चंकीलो।

रावोण उठ्ठावनु घोषण केल्लि। "तुम्मि सक अयकाय। आंव लंगेशु मेगेले मानाभिमान बेगेक जावनु रामालगी युद्ध कोरु वोत्ता।"

रावोणु राज्यसभा सोणु गेल्लो।

# विभीषोणु अणि रामु

विभीषोणु लंगेचे राज्यसभा सोणु उठ्ठावनु सम रामा दिक्कु गेल्लो। विभीषोणु लंगेचे वेलेरि बेस्सल्ले वानरसेने मोद्धे रबिल्ले रामालगी चंकीलो। विभीषोणु एत्ता अंगतान दिक्कीने। तो दावनु वोचुन विवोर रामा केलेयिलो।

"रामा एकु राक्षोसु एत्ता।"



ते अयकून हनुमन्तान संगीने

"श्रीरामदेवा तो विभीषोणु। बुद्धिवन्तुय धर्मिष्ठुय रावणालो दकूलो बावु। विभीषोणु रामालगी पवलो। अणि संगीने "हे रामा! आंव विभीषोणु। रावणालो बावु। मक्का अभय दींका। मेगेलो अण्णा रावोणु चाँग काय अयकना। तो तुजेलगी युद्ध कोरनु सीता तजलगी रब्बोंचा चोयता। मक्का ते चाँग मोणु दिस्सना। सीतादेवीक रामा वापस दीवनु लंगे रक्षण कोरू संगीने। ते जायनेय। आंवे रावणा सोणु धर्मकर्याक रामालगी रब्बूक एयला। इत्ति कोरचे?

विभीषणा! जायत तू अंचे कुट्टांतु राब। जायत जंचे केरि।

# युद्ध



दुसेरे दिस्सा श्रीरामु अणि सैन्य युद्धसन्नाहु कोरनु शंगु उद्धीलो।

ये अयकून रावणाने सैन्य मुकारि एयने।

घोरयुद्ध चंकीने। एत्ता पेत्तांतु ओलो ओलो पर्वतांपथर अनि रूक रुक्कावलि उम्माट्टुं विन्दुन युद्ध केल्ले। राक्षय वानरय मोरनु पोल्लि। रावणा कुलांतु ओले ओले राक्षस, मोरनु गेल्ले। रावणाने घोडे, एस्तियो, तेरे सक कुटि कुटि कोरनु पेलांगल्ले।

ये जँचाक रावणा पूत इन्द्रजीत एयलो। तोवोय जावनु लक्ष्मणान घोरयुद्ध केन्ने। दोन्निय भागाक ओडु कष्टनष्ट एयने।

इन्द्रजित्तान नागास्त्र सोल्ले।

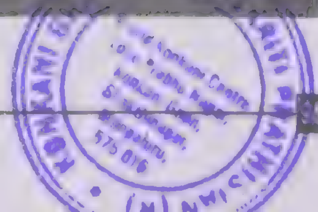
नागास्त्र लगून लक्ष्मोणुय मोहालस्यां पोल्लो। ये दिक्कुन वानर रामाले लक्ष्मणालेय चारीय भागाक एवनु रबीनि। रामान लक्ष्मणाक उपचार कोरनु गेल्लो।

ये दिक्कुन गेरुडु उँचारि उब्बोलो। गरुडाले प्रभाव कारण नागास्त्र निस्सोरनु गेल्ले। लक्ष्मोणुय उठ्ठायो।

दुसेरि घोरायुद्ध चंकीने। रावाणाले द्रुमाक्षु। वज्रधमृष्टुय मोरनु गेल्ले। यो विवोर रावणा मेल्लो। रावणाक कोपु एयलो। तो सम युद्धसन्नाहु कोरनु एयलो।

रावोणुय लक्ष्मोणुय एत्तापेत्ता युद्ध केन्ने। रावणान ब्रह्मास्त्र सोल्ले। ब्रह्मास्त्र एत्ता दिक्कुन लक्ष्मणा मुकारि हनुमन्तु दावनु एवनु रबीलो। अणि लक्ष्मणा रक्षण केल्लि।





तें जाँव इन्द्रजितु एयलो।  इन्द्रजित्तान जोप्पून अस्त्र सोल्ले। अस्त्र प्रभावान रामुय रामसेनेय मोहालस्या पल्लि।

ये दिक्कुन जांबुवान एयलो। हनुमन्तालगी संगीने।

"हनुमन्तराया तूं त अत्त रामाकेय वानराकेय रक्षण कोरका।"

"कस्सि ? हनुमन्तान निंगीन्ने अयकून जांबुवान संगीने।

"तू मृतसंजीविनि आडुका। ते बेगे हिमालयाक वोच्चुका।"

"जायत। आंव अत्त पवलो।"

उत्तले संगून हनुमन्तु हिमालयाक उब्बोलो।

# मृतसंजीविनि

निमिषमात्रेन हनुमन्तु उब्बुन हिमालया पवलो। तंगा चोंचाक बोरनु रूक रुकावेलि। नदियो, तलियो, सस्यसमृद्धीन अस्सिल्लो हिमालायाक चोवनु हनुमन्ताक अत्भुत दिस्सेने। "अंतु मृतसंजीविनि केंचि? देवा मक्का केलनामु? इत्ति कोरचे? सोमोय ना।"

हनुमन्तु एक निमिष रबीलो। ना। एकु पर्वता कुट्टूको काणु वोरिया।

हनुमन्तान एक पर्वाता कुट्टीके काणु वापस उब्बोलो। मृतसंजीविनि गेवनु हनुमन्तु लंगेच सुमेरा पर्वातारि पवलो। मृतसंजीविनिचो सुगन्दु गंचाक रामुय लक्ष्मोणुय वानरय उठ्ठायिनि।



दुसेरीय घोरयुद्ध चंकीने। युद्धांतु कुंबकर्णाले पूत कुंबाय, निकुंबाय मोरनु गेल्ले। तस्सी घरालो पूत मकराक्षायी युद्धांतु मेल्लो।

ये दिक्कुन रावोणुय इन्द्रजित्तुय कोरनु भीवनु युद्ध सोनु एकु यागु कोरू गेन्नि। यो विवोर विभीषणान रामा केलेयलो। "रामा रावोणु गेल्ला

एकु यागु कोरु। तो यागु पूर्णाकेल्ले रावणा मरण ना। तक्का हरवोंचा जंना। तंग वोचुन तो यागु भंग कोरका।

ये अयकून लक्ष्मोणु गेल्लो। इन्द्रजित्तय लक्ष्मोणुय जावनु घोरयुद्ध चंकीने। इन्द्रजित्तान जायते मायाजाल दक्केयिने। लक्ष्मणान मन्त्र जपुन अस्त्र सोल्ले। अस्त्र लगून इन्द्रजित मोरनु पोल्लो। यो विवोर रावणाक मेल्लो। रावोणु कोप्पान वोचून कुंभकरर्णाक उठकरायलो। तो निद्देन्तु सुकून कोप्पान उठावून एवनु रामालगी युद्ध केल्ले। घोर युद्धांतु रामालो बाणु लगून कुंभकर्णु मोरनु गेल्लो।



रावोणु दावनु कोप्पान युद्धसन्नाहु कोरनु रामा मुकारि एयलो। रावण कुडुंब ओड दुःखांतु जन्नि। एकमट्टे अस्सिले दंदूले सक मोरनु गेल्ले। अनि इत्ति कोरचे? मण्डोदरि रावणाने संगीने "हे महाबाहो!

तुम्मि ये युद्ध रबेयायि। ते सीताक सोणु दियायि। तिक्का दुवे मट्ट दिखायि। तो त धर्मु।"

जायनेय मण्डोदरि। अणि जायनेय। मक्का सीता जाँका मोणु ना। तूंचित मेगेली सर्वश्य। ते तुक्का कोलचे नेयवे? अंका अभिमानु अणि गर्वु राक्षस कुलाचो! शूर्पणका मेगेलि बेयणि। ती केस्सली जावो। तिगेने दुःख मेगेनेयत। तूवेयि एक बायल नेयिवे? रावोणु नादलारी रामु कोणे एक! आंव वोत्ता।

दूसेरे दिस्सा घोर युद्ध चंकीने। दशमुखरावोणुय रामुय!

युद्ध दिक्कूक आकाशारी देवगण एवनु रबीनि। युद्धांतु रावणान जायते मायाजाल दक्केयिने।



तो रावोण मायारथारी चोवणु चारीयि दिक्कारि बोवनु रामालगी युद्ध केल्ले।

ये दिक्कुन इन्द्रदेवान तगेने रथ रामाक सोणु दिल्ले।

युद्धांतु अगस्तमहर्षिन दिल्लोलो आदित्यहृदय मोन्त्रु जप्पुन रामान अस्त्र सोल्ले। अस्त्र लगून रावोण मोरणु पोल्लो।

युद्ध समाप्त जल्ले।

# सीतायि रामुय

प्रकृति शान्त जल्लि। सर्वत्रा शान्तता।

रामान लक्ष्मणालगी संगीने

“हे लक्ष्मणा रावाणोलो संस्कारु यथाविधि पूर्ण आदर दीवनु केरी। तें जावनु सीता दिक्कु।”



रामान संगीन्ने अयकून लक्ष्मणाने सुग्रीवानेय कोरनु रावणाने देहसंस्कारु यथाविधि केल्लो। तें जावनु विभीषणाक लंगेशु जावनु राज्याभिषेकु केल्लो।



विभीषणान सीतेक पूर्ण राज्यबहुमति दीवनु रामालगी बेलेयलि। रामान यथाविधि अग्निशुद्धीन सीता कल्लि। अनि रामान संगीने

"हे लक्ष्मणा अंका वापस वोच्चा। सुग्रीवा तू इत्ति संकता?"

"जायत श्रीरामदेवा! वोच्चा वापस।"

लक्ष्मणान निंगीने "अण्णा रामा तू कस्सेन संकेता? यी सुवर्णा नगरी सोणु कसेलाक अयोध्येक? दूसेरी ते भरतालगी मर्णि कोरुवे?"

"अरे लक्ष्मणा तू कस्सेने संकेता? अम्मीत विभीष्णाक राज्याभिषेक केल्लेलो। तो त अंगाचो रायु। तजे खल्लाकवे? अवुशो अयोध्येंतु असेयि। तुगेली ऊर्मिला मेगेली अम्मा कौसल्या तुगेली अम्मा सुमित्रा तंका विसोरलोवे? भरोतु तुजेमट्टेच त मक्का। अंका बान्डि सोडिया। यो वोच्चा।"

ये अयकून रब्बीलो विभीषोणु। तो मुकारि एयलो। अणि संगीने। "हे श्रीरामदेवा लक्ष्मणा! अण्णाक कुबेरान दिल्लेने पुष्पकविमान अस्स। तुम्मि तजेरि वोच्चाय। तुंक्का तजेरि आकाशमार्गेण अयोध्येंतु पावयांत।

पुष्पकविमानारि रामुय लक्ष्मोणुय सीताय चेल्लि। कुट्टांतु हनुमन्तुय। पुष्पकविमान तंक्काय गेवनु उब्बने।

# पट्टाभिषेकु

विमानारी बस्सुन रामाने सीताक भरतभूमीचि प्रकृतिभंगि संगून दक्केली। समुद्र, महेन्द्रपर्वत, अगस्तकूड, कावेरी, कृष्णा, ऋषिमुकाचल, गोदावरि, चित्रकूड, सक दिक्कुन जंचाक तन्नि भरद्ववाजा आश्रामां देवनि। तंगा ऋषिकुडांतु रबीनि।

भरद्ववाजा मुनि संगीने "हे रामा अंका ओडु सन्तोषु। तुंक्काय रक्कून भरोतु बेस्सोल्लो अस्स। अंका फल्ले तजेलगी वोच्चु।"



रामान हनुमन्तालगी संगीने "हे हनुमन्ता तू विवोर भरता केलेयि।"

हनुमन्तान संगीन्ने अयकून भरतान रामाकेय परिवारांकेय आदरान ओयोध्याक वोरूक जाँका जल्लेने केल्ले।

सुवर्णरथारी एयलेले रामाक भरतान आदर दीवनु अयोध्येक अप्पेयलो। अयोध्येंतुले जनपतानी सुवर्णरथारी सुकुन सीतासमेत देवनु एयलेले श्रीरामाक पुष्पवृष्टीन आदर दीवनु स्वागत केल्ले।

दुसेरे दिस्सा यथाविधि पट्टाभिषेकु चंकीलो।

वसिष्ठु, जाबालि, काश्युपु, कात्यीयोनु, गौतुमु, वामदेवु, विजय, इस्सि अस्सिल्ले श्रेष्ठ ऋषिवर्रायनि अल्लेने तीर्थजलान रामालो अभिषेकु केल्ले अणि सीताकेय रामाकेय सिंहसानारि बस्सेयिनि।



देवागणानि पुष्पवृष्टि केल्लि।

तें जावनु श्रीरामानेय सीतादेवीनेय कोरनु संकटांक उपहारु दिल्लो। सुग्रीवु, अंगोतु, विभीषोणु, हनुमन्तु, सक मुकारि एवनु उपहारु काण्केवनु विडा निंगीली।

रामान संक्टांग आदरोयुय सन्तोषुय दक्कोन विडा दिल्लि।

हनुमन्तु मुकारि एवनु रामालगी संगीने देवा मक्का तूंत ओड्डु। तुक्काय सीतादेवीकेय सोणु केय वोच्चा जायनेय। आंव तुगेलो पादसेवक जावनु अंका रबता। कृपा कोरका।"

जायत हनुमन्ता ! जायत ! तू अंचेकेलोचि। तू सन्तोषान अंका राब।

अयोध्याचे जनपत श्रीरामलो पट्टाभिषेकु जावनु सन्तोषान तकतगेले गांवांतु गेल्लि।

सीताय रामुय अयोध्येन सुखान राज्यभारु चोयनि।

अंका कोंगणि रामायणं समाप्त करता।



म अशिर्वादु

जयलक्ष्मी

Jayalakshmi ®



**शंकर रामनाथ नायक (रामनाथजी)**
केरलान्तु चेर्तले उलबैपे 'श्रीशंकरम'
२८.०२.१९४९ जनन।
पल्लि वेली एल.पी.स्कूलातुय, अल्पले
टी.डी.स्कूलातुय, बीच सरकार स्कूलातुय,
एस.डी. कोलॅजातुय जावनु कलालय जीवन।

मुख्य ग्रन्त : (मलयालम) केशवगाथा, स्मरामी माधवम, गुरुजी परंज़ कथकल, दीनदयाल उपाध्याय, माधवराव मुले, भय्याजीदानी, लक्ष्मीबायीकेल्कर (मौसीजी) कर्मयोगीयुडे ग्रामं,भगिनी निवेदिता, ललितरामायण, स्वामी विवेकानन्दन, श्री गुरुजी, श्री कृष्णकथा, कर्मयोगो विशिष्यते, कोनारक (हिन्दी, अंग्रज़ी, मलयालम, हैन्दवकेरलम ((हिन्दी, मलयालम) भारतीय ऋषी परंपरा (मलयालम)




**GOPAL RAMJI PUBLICATIONS**
East Fort, Thiruvananthapuram